7/8/13

आधुनिक भारत

ब्रिटिश आर्थिक नीति – भू राजस्व नीति, कृषि का वाणिज्यीकरण, रेलवे, धन निकासी, औद्योगिक नीति

सामाजिक सांस्कृतिक नीति – समाज सुधार की नीति, शिक्षा

प्रशासनिक नीति देशी राज्यों के प्रति नीति, सहायक संधि प्रणाली एवं डलहौजी की नीति, न्याय व्यवस्था

भारतीय प्रतिक्रिया – किसान एवं जनजाति विद्रोह, 1857 का विद्रोह

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

राष्ट्रीय आंदोलन – उद्भव, विकास, कांग्रेस स्वरूप एवं विकास

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विकसित विचारधाराएं –

* उदारवादी
* उग्रवादी
* क्रांतिकारी
* गांधीवादी
* समाजवादी

~~गांधीवादी~~

महत्वपूर्ण आयोग

* साइमन कमीशन
* नेहरू रिपोर्ट
* अगस्त प्रस्ताव
* माउण्टबेटन योजना

⇒ भारत की स्वतंत्रता एवं विभाजन
⇒ संवैधानिक विकास

UPSC के अनुसार पाठ्यक्रम

⇒ 18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहास - महत्वपूर्ण घटनाएं, व्यक्तित्व, विषय।

⇒ स्वतंत्रता संग्राम - इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों में इसमें अपना योगदान देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति / उनका योगदान

⇒ स्वतंत्रता के पश्चात देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन

10/8/13

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चरण

(I) व्यापारिक पूंजीवाद (1757-1813)

अहस्तक्षेप करके - राजनीतिक, सामाजिक रूप से

(II) औद्योगिक पूंजीवाद (1813-60)

भारत कच्चे माल का निर्यातक
तैयार माल का आयातक
EIC का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर मुक्त व्यापार नीति लागू किया। मुक्त व्यापार की नीति को आर्थिक क्षेत्र मे अहस्तक्षेप नीति कहा गया। राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र मे हस्तक्षेप किया।

(III) वित्तीय पूंजीवाद (1860 के बाद)

रेलवे, संचार, बैंकिंग मे निवेश

उपनिवेशवाद के चरण

(1) भारत मे व्यापारिक पूंजीवाद के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य माने गये-

(I) भारत के व्यापार पर एकाधिकार कायम करना
(II) सत्ता पर नियंत्रण स्थापित कर राजस्व की प्राप्ति करना
(III) कम से कम मूल्य पर वस्तुओं को खरीदकर

उन्हे आधार से अधिक मूल्य पर यूरोप मे बेचकर मुनाफा कमाना।
इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सभी प्रतिद्वंद्वियों को हर संभव तरीके से बाहर निकालना

प्रक्रिया

भारत के राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र मे अहस्तक्षेप की नीति का पालन करते हुए अपने व्यापार पर ध्यान केन्द्रित करना किन्तु आवश्यक होने पर युद्ध भी करना।

औद्योगिक पूंजीवाद (1813-60)

ब्रिटेन मे औद्योगिक क्रांति हो रही थी और इसलिए कच्चे माल की प्राप्ति और कारखाना निर्मित वस्तुओं की बिक्री के लिए एक बड़े बाजार की जरूरत थी। अतः ब्रिटिश ने भारत मे निम्नलिखित नीतियां लागू की।

(I) कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया और मुक्त व्यापार की नीति अपनायी। इसे आर्थिक अहस्तक्षेप की नीति भी कहते हैं।

(II) भारत के सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र मे सक्रिय हस्तक्षेप कर अपने हितो को पूरा करना और इसके तहत समाज सुधार कानून बनाये गये। आधुनिक शिक्षा प्रणाली लाए की गयी। और इस

तरह एक ऐसे वर्ग का सृजन हुआ, जिसकी सोच विचार अंग्रेजों के हितों के अनुकूल थे।

(iii) इस दौर में ब्रिटिश ने राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप की नीति अपनायी और विलय की नीति पर बल दिया। फलतः डलहौजी के साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को इसी दौर में देखा जा सकता है। इस तरह मुक्त व्यापार की नीति और राजनीतिक साम्राज्यवाद की नीति का चरम दौर डलहौजी का शासन माना जा सकता है।

वित्तीय पूंजीवाद (1860 के बाद)

ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप अत्यधिक पूंजी एकत्र हो गयी थी। अतः इस पूंजी के निवेश के लिए उपनिवेशों की तरफ कदम बढ़ाया गया, क्योंकि वहां श्रम सस्ता था। अतः मुनाफा ज्यादा हो सकता था। इसी क्रम में रेलवे, बैंकिंग, जहाजरानी उद्योग, बीमा, संचार जैसे क्षेत्रों में निवेश किया गया और इस माध्यम से ब्रिटिश ने इंग्लैण्ड के पूंजीपतियों को मुनाफा प्रदान किया तो दूसरी तरफ भारतीय लोगों एवं जनता पर अपनी औपनिवेशिक पकड़ मजबूत की।

Q ब्रिटिश उपनिवेशवाद के चरणों को रेखांकित करते हुए भारत में विऔद्योगीकरण के कारणों की समीक्षा कीजिए।

ब्रिटिश भू राजस्व नीति

- क्यों लागू की
- विभिन्न नीतियाँ
  - स्थायी बंदोबस्त
    - उद्देश्य
    - विशेषताएं
    - प्रभाव
      - सकारात्मक
      - नकारात्मक
  - रैयतवाड़ी बंदोबस्त
    - विशेषताएं
    - प्रभाव
  - महालवाड़ी
    - विशेषताएं
    - प्रभाव
- प्रभाव

पूर्व ब्रिटिश काल

भू राजस्व का अर्थ
⇓
उत्पादन का हिस्सा
⇒ उत्पादन के घटने बढ़ने से राज्य की आय पर प्रभाव पड़ेगा
⇒ भू स्वामित्व की अवधारणा स्पष्ट नहीं थी

ब्रिटिश काल

भू राजस्व का अर्थ
⇓
भूमि का किराया
⇒ भूमि का मालिक जमींदार हो गया

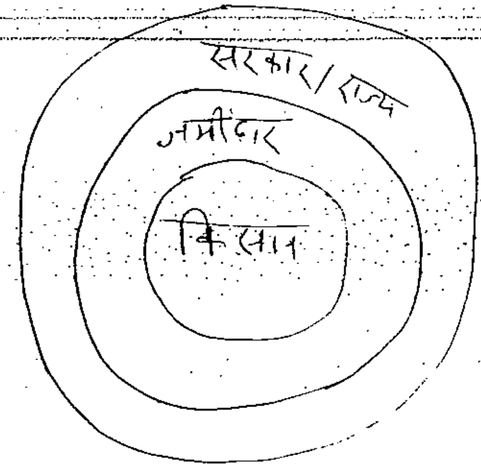

सरकार
जमींदार } कर
कृषक

⇒ वन, चारागाह पर सामुदायिक अधिकार समाप्त

⇒ निश्चित तिथि तक शाम तक कर जमा न करने पर जमींदारी को नीलामी – सूर्यास्त कानून

⇒ हाउआको विकसित हुई

सरकार
↓
बड़े जमींदार
↓
अन्य, निचले
गाँव के स्थानीय सेवक
↓
कृषक

⇒ उप सामंतीकरण / ऊपर वाली जमींदारी प्रथा

2/8/13

स्थायी बंदोबस्त

उद्देश्य क्यों लाया गया?

विशेषताएं

प्रभाव — सकारात्मक / नकारात्मक

उद्देश्य -

(1) भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार के लिए धन की आवश्यकता थी। वस्तुतः वस्तुओं की खरीद, अधिकारियों के वेतन भत्ते और शस्त्रीकरण के लिए जिस धन की आवश्यकता थी उसका मुख्य स्रोत भू-राजस्व था। अतः ब्रिटिश ने भूराजस्व के संदर्भ में भिन्न-भिन्न प्रणालियां अपनायीं और इनकी भिन्नता का कारण भारत की स्थानीय परिस्थितियों के साथ साथ यूरोप में प्रचलित विचारधारा भी थी। (उपयोगितावादी विचारधारा)

(2) भूराजस्व की राशि को स्थायी रूप से प्राप्त करना, राजनीतिक रूप से ऐसे समर्थक वर्ग का निर्माण करना जो ब्रिटिश शासन का सहयोगी हो और जन प्रतिक्रिया पर अंकुश लगा सके।

(3) प्रशासनिक कठिनाईयों से बचते हुए अपने आर्थिक हितों को पूरा करना।

(4) कृषि का विकास करना।

विशेषताएं:

(1) इसके तहत जमींदारों/को बिचौलियों को भूमि का स्वामी मान लिया गया और किसानों को उनके परंपरागत अधिकारों से वंचित कर दिया गया।

(2) भूराजस्व की राशि का निर्धारण में तत्कालीन वर्षों में संग्रहित की गयी (1790-91) राशि को आधार बनाया गया। ~~जमींदारों~~

(3) जमींदारों के ऊपर नियंत्रण लगाते हुए एक सूर्यास्त कानून लाया गया जिसके तहत एक निश्चित तिथि तक ब्रिटिश सरकार को लगान अदा न करने पर जमींदारों की जमीन नीलाम कर दी जायेगी।

(4) यह व्यवस्था कुल ब्रिटिश भारत के 19% क्षेत्र पर लागू की थी जिसके तहत बंगाल, बिहार, उड़ीसा का क्षेत्र शामिल था।

(5) इस व्यवस्था में जमींदार और सरकार का अंश निर्धारित कर दिया गया।

प्रभाव (सकारात्मक)

ब्रिटिश हित

(1) ब्रिटिश सरकार को एक नियमित और निश्चित आय प्राप्त हुई।
(2) प्रशासनिक कठिनाईयों से बचते हुए अधिक लाभ प्राप्त किया।
(3) एक समर्थक जमींदार वर्ग का सृजन हुआ जो 1857 के विद्रोह में उसके पक्ष में खड़ा रहा

(4) भारतीय हित

जमींदारों की समृद्धि बढ़ी और वे एक मध्य वर्ग के विकास का स्रोत भी बने, जिसने औपनिवेशिक शोषण की पहचान भी की थी साथ ही स्थानीय साहित्य और कला को भी संरक्षण मिला।

नकारात्मक प्रभाव

भारतीय अर्थव्यवस्था पहली बार गांवों के स्तर पर सरकार के परिवर्तन को महसूस कर रही थी और यह प्रभाव भी प्रतिकूल था। इस व्यवस्था में किसानों का अत्यधिक शोषण

हुआ। वस्तुतः उपज के तीन भागीदार ~~द~~ जमींदार, सरकार एवं कृषक सामने आये जिसमें सरकार और जमिंदार की आय तो निश्चित थी किन्तु किसानों की आय निश्चित नहीं बल्कि इन दोनों की दया पर निर्भर हो गयी।

(2) अनुपस्थित जमिंदारी प्रथा का विकास हुआ। फलतः शोषण और बढ़ा।

(3) कृषि का विकास नहीं हो पाया क्योंकि किसानों के पास पूंजी नहीं थी और जमिंदारों की कृषि विकास में रुचि नहीं थी क्योंकि यह भी सरकार के लगान ~~र~~ रैय्यत के ही समान थे।

(4) ब्रिटिश सरकार को भी इस व्यवस्था से कठिनाई पैदा हुई क्योंकि आय निश्चित और स्थिर हो जाने से बढ़ती वित्तीय आवश्यकतायें पूरी नहीं हो पा रही थी और साथ ही जमिंदारों के अत्यधिक शोषण से सरकार को कृषक विद्रोहों का ~~सामना भी करना पड़~~ और प्रशासनिक समस्यायें भी पैदा हुई।

Q "स्थायी बंदोबस्त एक साहस और बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य था।" समीक्षा कीजिए। 150 शब्द

संकेत

साहस / बुद्धिमत्ता

कथन का आशय

(1) पक्ष में - साहस कैसे - * भूस्वामित्व ~~स्वामि~~

* स्वामित्व के संदर्भ में -

(2) बुद्धिमत्ता < आर्थिक उद्देश्य - स्थायी लाभ
प्रशासनिक उद्देश्य - कठिनाई में कमी
राजनीतिक उद्देश्य - समर्थन जमींदारों का

(3) कथन की समीक्षा - स्थायी बंदोबस्त के नकारात्मक प्रभाव
|
ब्रिटिश संदर्भ में तथा भारत के संदर्भ में

निष्कर्ष

साहसी कदम तो था किन्तु बुद्धिमतापूर्ण नहीं ~~है~~ था क्योंकि स्थायी बंदोबस्त सभी जगह लागू नहीं की गयी।

रैय्यतवाड़ी बंदोबस्त

क्यों लागू किया — परिस्थितियां + विचारधारा

विशेषताएं

प्रभाव

सरकार

कृषक -(उत्पादक) → राष्ट्रीय आय − लागत मूल्य = राष्ट्रीय अधिशेष

किसान को भूमि का मालिक स्वीकार कर लिया गया। किसान ने खेतों में सुधार के लिए साहूकार से तक़वा लेना ~~शुरू~~ शुरू किया जिससे साहूकार का उद्गम हुआ।

इंग्लैंड में उपयोगितावादी विचारधारा लोकप्रिय हो रही थी जिसमें कहा गया कि अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख को ध्यान में रखकर नीतियां बनायी जाएं। यह विचारधारा कानून के माध्यम से सुधारों पर

बन देती है। इस विचारधारा के समर्थक बेंथम मिल, रिकार्डो, तथा बैंटिक आदि थे।

रिकार्डो के लगान सिद्धांत के अन्तर्गत कहा गया कि किसानों के द्वारा जो उत्पादन होता है, उसमें से उत्पादन लागत घटाकर जो शेष बचता है- वह राष्ट्रीय अधिशेष होता है जो सरकार के पास जाना चाहिए किन्तु इसे बिचौलिए हड़प लेते हैं। अतः उत्पादक एवं सरकार के ~~बीच~~ बीच प्रत्यक्ष संबंध होना चाहिए और बिचौलियों की समाप्ति होनी चाहिए। इससे प्रेरित होकर भारत में रैयतवाड़ी प्रथा लागू की गयी। दूसरी तरफ दक्षिण एवं पश्चिम भारत में साम्राज्यवादी विस्तार हो रहा था और वहाँ भी ब्रिटिश को भूराजस्व की प्रणाली लागू करनी थी किन्तु कोई स्पष्ट जमींदार वर्ग नहीं था। अतः उन्होंने ~~किसानों से समझौते पर बल दिया।~~

स्थायी बंदोबस्त से ब्रिटिश की बढ़ती आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पा रही थी। समय-समय पर राजस्व का पुनर्निर्धारण वाली व्यवस्था चाहिए थी। इसलिए रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू की गयी।

विशेषताएं

(1) प्रत्येक रैय्यत को भूस्वामी मान लिया गया और लगान का समझौता उससे किया गया।

(2) प्रत्येक 20 से 30 वर्षों में भूराजस्व का पुर्ननिर्धारण किया जाता था।

(3) सामुदायिक सम्पत्ति एवं बंजर भूमि पर राज्य का नियंत्रण रखा गया।

(4) यह व्यवस्था कुल ब्रिटिश भारत के सर्वाधिक क्षेत्रों में लागू की गयी। (51%)

प्रभाव

सैद्धांतिक दृष्टि से किसान स्वतंत्र स्थिति में थे क्योंकि भूमि पर उनका अधिकार था किन्तु व्यवहारिक रूप से किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ। भूराजस्व की अधिकतम दर के कारण उन्हें साहूकारों से कर्ज लेना पड़ा। ~~फलतः उसे कर्ज लेना पड़ा।~~ फलतः वह ऋणग्रस्त हुआ और क्रमशः उसकी जमीन हाथ से निकल गयी और वह मालिक से मजदूर बन गया।

महालवाड़ी व्यवस्था

महाल का तात्पर्य गाँव है और इसके तहत ब्रिटिश सरकार ने गांव से भूराजस्व प्राप्ति का समझौता किया अर्थात गांव का मुखिया सरकार के भूराजस्व को किसानों से एकत्रित करेगा। यदि कोई किसान लगान नहीं देता है तो भूमि ग्राम सभा के पास चली जाती है। इस व्यवस्था में समय-समय पर राजस्व का पुर्निर्धारण किया जा सकता था। यह व्यवस्था मध्य प्रांत, संयुक्त प्रांत के पश्चिमी क्षेत्र पंजाब में लागू थी। (30%)

सरकार
↑
मुखिया
↑
कृषक

ब्रिटिश भू राजस्व नीति का प्रभाव -

(1) किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ।

(2) समाज का आर्थिक विभाजन गहरा हुआ।

(3) कृषक संबंधों में नवीन वर्गों का विकास हुआ (साहूकार, महाजन) जिनका हित ब्रिटिश हितों से जुड़ गया।

(4) भूमि को क्रय विक्रय बना दिया। अतः ऋण लेने की प्रवृत्ति बढ़ी। मुकदमेबाजी का विकास हुआ। संयुक्त परिवार में दरार पड़ी और ग्रामीण ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।

(5) अत्यधिक भूराजस्व चुकाने के लिए किसानों को नकदी फसलों के लिए बाध्य होना पड़ा। फलतः अनाजों का उत्पादन कम हुआ और अकाल की बारंबारता में वृद्धि हुई।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि ब्रिटिश भूराजस्व पद्धति ने चाहे अलग-अलग नीति बनायी हो किन्तु सभी का लक्ष्य था अधिकतम भूराजस्व की ~~प्राप्ति ऐसे में~~ किसानों का अत्यधिक शोषण हुआ। चूंकि किसान गांवों में रहता था और भारत में गांवों में बसता था, फलतः किसान के निर्धनीकरण से गांव एवं भारत निर्धन हुए। इस तरह ब्रिटिश भूराजस्व नीति ए

गाँव अशांत हुए जिसकी अभिव्यक्ति विभिन्न किसान जनजातीय विद्रोहों में देखी जा सकती है।

3/8/13

कृषि का वाणिज्यीकरण

- अर्थ
- उत्तरदायी कारक — ब्रिटिश का उद्देश्य
- विशेषताएं / प्रक्रिया
- प्रभाव

पहले कृषि — प्राथमिकता — अपनी आवश्यकता — खाद्यान्न
— बाजार के लिए उसके बाद

ब्रिटिश काल में उत्पादन की प्राथमिकता बाजार के लिए हो गया। इसके लिए नकदी फसलों पर जोर दिया गया।

कृषि का वाणिज्यीकरण —

कृषि के वाणिज्यीकरण का अर्थ है व्यापारिक मुनाफे को ध्यान में रखकर नकदी फसलों की खेती पर बल देना और यह ब्रिटिश कृषि नीति का एक अंग थी। उदाहरण चाय, कॉफी आदि।

⇒ यह औपनिवेशिक हितों से परिचालित थी इसलिए भारतीय किसानों के लिए हित में नहीं थी।

उद्देश्य

(1) भूराजस्व के लिए

(2) औद्योगिक क्रांति इंग्लैण्ड में हो रही थी। उद्योगों के लिए कच्चे माल की जरूरत थी। भारत के खाद्यान्न को इंग्लैण्ड में मजदूरों के लिए अंशतः भेज दिया गया।

(3) त्रिकोणीय व्यापार

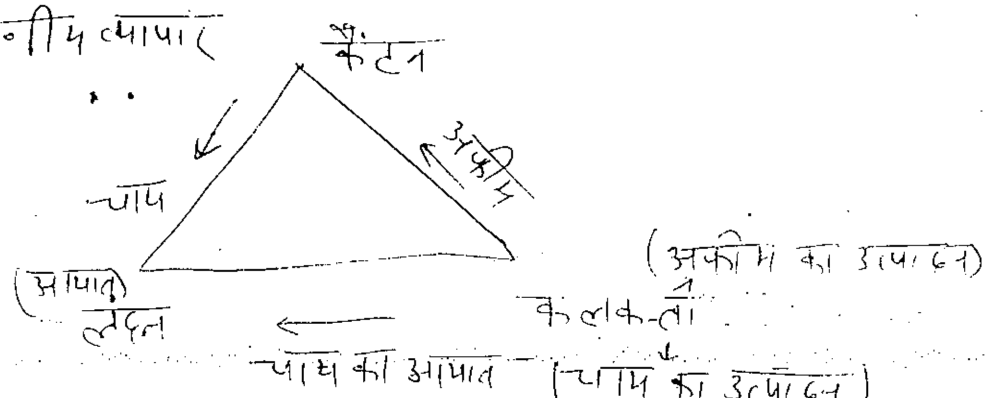

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संतुलन के लिए नकदी फसल का उत्पादन

अमेरिकी गृह युद्ध के कारण - भारत में; कपास के उत्पादन को बढ़ाया गया।

उत्तरदायी कारक

(1) भूराजस्व की अधिकतम राशि को चुकाने के लिए किसानों को नकदी फसल बोने हेतु बाध्य कर उन्हें कर देने हेतु सहायक बनाया।

(2) ब्रिटेन में हुई औद्योगिक क्रांति ने उद्योगों के लिए कच्चे माल और मजदूरों के लिए खाद्यान्न की आवश्यकता सामने रखी। अतः भारत से कच्चे माल और खाद्यान्न के निर्यात पर बल दिया गया और यह

कच्चा माल नकदी फसलों की खेती के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता था। ब्रिटिश द्वारा अपने अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संतुलन को बनाये रखने हेतु. कलकत्ता, कैंटन, लंदन के बीच त्रिकोणीय व्यापार विकसित किया गया जिसमें नकदी फसलों की खेती आवश्यक थी। वस्तुत: इंग्लैण्ड ने अपनी चाय की मांग को पूरा करने के लिए चीन के ऊपर निर्भरता कम करने के लिए भारत में चाय की खेती पर बल दिया तो साथ ही भारत में अफीम के उत्पादन पर बल देकर उसका निर्यात चीन किया और इस तरह व्यापारिक संतुलन लंदन के पक्ष में रखा गया।

विशेषताएं / प्रक्रिया

(1) नकदी फसलों की खेती पर बल

(2) क्षेत्र विशेष के आधार पर विशेषीकृत फसलों के उत्पादन पर बल दिया गया- जैसे बंगाल में जूट; चाय तो महाराष्ट्र में चाय, मध्य भारत, बिहार में अफीम की खेती पर बल

दिया गया।

प्रभाव

नकारात्मक प्रभाव

(1) किसानों की गरीबी और ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई। बहुत किसानों को बाध्य होकर व्यवसायिक फसलों का उत्पादन करना पड़ा। अतः खाद्यान्न उत्पादन में कमी हुई और इसकी वजह से अकाल की बारंबारता बढ़ी।

(2) भारतीय कृषक एक अपरिचित एवं दूरवर्ती विदेशी बाजार पर निर्भर हो गया। इसका एक मात्र संबंध बिचौलियों की श्रृंखला के माध्यम से था। अतः मांग एवं मूल्य में कमी का दुष्प्रभाव केवल भारतीय किसान वर्ग पर पड़ा। जैसे अमेरिकी गृह युद्ध के दौरान जब कपास का इंग्लैण्ड पहुँचना बाधित हुआ तो इस कपास की आवश्यकता की पूर्ति भारत में कपास उत्पादन पर बल देकर की गयी। किन्तु जैसे ही अमेरिकी गृह युद्ध समाप्त हुआ और अमेरिका इंग्लैण्ड व्यापारिक संबंध पुनः सामान्य हुए तो भारत से कपास की मांग कम

हो गयी और इस मांग में कमी का दुष्प्रभाव केवल भारतीय कृषकों को उठाना पड़ा। यही वजह है कि भारत में दक्कन के दंगों के रूप में कृषक विद्रोह भी हुआ।

(3) भारतीय किसानों का शोषण बढ़ा क्योंकि नकदी फसलों की खेती के लिए उन्हें महाजनों से कर्ज लेना पड़ा। फलतः ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।

सकारात्मक प्रभाव -

(1) विभिन्न क्षेत्रों में अलगाव की स्थिति समाप्त हुई और शहरी ग्रामीण सम्पर्क बढ़ा।

(2) भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ गयी।

(3) विशेषीकृत फसल उत्पादन के क्षेत्र विकसित हुए।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर कृषि के वाणिज्यीकरण का भारतीय किसानों को वैसा लाभ नहीं मिला जैसा कि इंग्लैण्ड के किसानों को उस

देश में कृषि के वाणिज्यीकरण से मिला था। चूंकि यह भारतीय किसानों पर आरोपित पद्धति थी। अतः इसका लाभ भी आरोपित करने वाले ब्रिटिश को मिला। वस्तुतः यह औपनिवेशिक ढांचे के अंदर 'लागी गयी' पद्धति थी। यही वजह है कि प्रगतिशील अवधारणा होते भी इस पद्धति ने भारतीय कृषि एवं कृषकों को निर्धन बनाया और अकालों की बारंबारता में वृद्धि हुई।

औद्योगिक नीति

हस्तशिल्प उद्योगों का पतन (विऔद्योगीकरण)

- अर्थ
- पतन के कारण
- प्रभाव
  - सकारात्मक
  - नकारात्मक

हस्तशिल्प उद्योगों का पतन विऔद्योगीकरण कहलाता है। वस्तुतः 19वीं सदी में ब्रिटिश ने ब्रिटेन के औद्योगीकरण को ध्यान में रखते हुए भारत के संदर्भ में मुक्त व्यापार की नीति लागू की और जिसने

हस्तशिल्प उद्योगों का पतन कर दिया।

पतन के कारण

(1) मुक्त व्यापार की नीति

(2) अंग्रेजी शासन ने तमाम देशी राज्यों को समाप्त कर दिया और इस तरह भारतीय हस्तशिल्पों का संरक्षणकर्ता वर्ग समाप्त हो गया।

(3) ब्रिटेन ने अपने औद्योगिक माल को भारतीय बाजारों में पाट दिया और जिसका मुकाबला करने में भारतीय हस्तशिल्प सक्षम नहीं रहे।

(4) ब्रिटेन ने अपने यहाँ भारत निर्मित वस्तुओं के आयात पर उच्च शुल्क लगाये, जिससे भारतीय वस्तुएं अत्यन्त महंगी हो गयी और उनकी मांग कम हो गयी। इस तरह घरेलू और विदेशी बाजार भारतीय वस्तुओं के हाथ से निकल गये। फलतः हस्तशिल्पों का पतन हुआ।

(5) ब्रिटिश शिक्षा नीति ने भारत में एक ऐसे वर्ग का सृजन किया जो रक्त एवं रंग में

भारतीय किन्तु आचार-विचार एवं रुचि में पक्का अंग्रेज था और इसने ब्रिटिश वस्तुओं को प्रश्रय दिया।

(6) रेलवे के विकास से ब्रिटिश निर्मित वस्तुएं दुरस्थ क्षेत्रों में पहुचायी जाने लगी।

प्रभाव

नकारात्मक -

परम्परागत उद्योगों का पतन हुआ किन्तु आधुनिक उद्योगों का निर्माण नहीं किया गया। अतः बडी संख्या में शिल्पी बेरोजगार हुए और विवश होकर उन्हें कृषि की ओर झुकना पड़ा। अतः कृषि पर बोझ बढ़ा। पहले से पिछड़ी कृषि और पिछड़ गयी और अकाल की समस्या में वृद्धि हुई।

(2) ग्रामीण अर्थव्यवस्था ~~कृषि~~ और उद्योग के परस्पर संबंध पर आधारित थी किन्तु हस्तशिल्पों के पतन से यह संबंध टूट गया और भारत पूर्णतः एक कृषि देश के रूप मे सामने आया। फलतः भारत का कृषि विकास, औद्योगिक विकास अवरुद्ध हुआ।

सकारात्मक प्रभाव

हस्तशिल्प उद्योगों का पतन आधुनिक उद्योगों के विकास के लिए भारत में मार्ग प्रशस्त करता है किन्तु यह औपनिवेशिक काल में व्यवहार में कभी नहीं आया।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि ब्रिटिश एवं कृषि एवं औद्योगिक नीति ने भारत की अर्थव्यवस्था के ढांचे में विनाशकारी परिवर्तन लाया। ब्रिटिश भू राजस्व नीति, कृषि का वाणिज्यीकरण और हस्तशिल्प उद्योगों के पतन ने गाँव की आबादी को निर्धन बना दिया। यह आबादी सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करती थी। इसके ~~उपलब्धि से~~ भारत निर्धन कर्जदार देश के रूप में सामने आया और यह भारतीय औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का सर्वप्रमुख लक्षण बनाया।

14/8/13

रेलवे

- उद्देश्य
- विकास
- स्वरूपगत विशेषता
- रेलवे एवं भारत का आधुनिकीकरण
- प्रभाव
  - सका॰
  - नका॰

स्वतंत्रता से पहले

⇒ 50 हजार किमी रेलवे लाइन
इसे बिछाने में 50-60 वर्ष लगा

⇒ अपने वस्तुओं की आवाजाही और सैनिकों को पहुँचाने के लिए।

⇒ भारत पर औपनिवेशिक पकड़ मजबूत हुई।

⇒ आर्थिक, प्रशासनिक, राजनीतिक उद्देश्य

स्वतंत्रता बाद

65 हजार किमी.
65 वर्षों में 13-15 हजार किमी विकास हुआ।

⇒ लोगों के आगमन के लिए

स्वरूपगत विशेषता -

निवेश के लिए 5% का लाभांश की गारन्टी दी गयी ताकि ब्रिटेन के उद्योगपतियों को लाभ दिया जा सके। गारन्टी मनी से भारत के धन के निकासी हुई। रेलवे के निर्माण में ब्रिटेन की तुलना में लागत में तीन गुना वृद्धि हुई। इसका कारण फिजूलखर्ची था। भारत में रेलवे लाईन बिछाने के लिए कर्ज लिया गया। कर्ज के ब्याज को चुकाने के लिए भी कर्ज लिया गया।

सकारात्मक प्रभाव

(1) आवागमन के तीव्र साधन
(2) एकीकरण में भूमिका
(3) राष्ट्रवाद का विकास
(4) आधारभूत ढांचे का विकास
(5) जाति-पाति की भावना हतोत्साहित हुई।

नकारात्मक प्रभाव

(1) पूंजी का निकास
(2) परंपरागत भारतीय हस्तशिल्प उद्योग संरचना का विनाश

(3) बेरोजगारी फैली
(4) कृषि पर बोझ बढ़ा
(5) कर्ज ऋणग्रस्तता बढ़ी
(6) अकाल में वृद्धि हुई।

उद्देश्य

(1) ब्रिटिश साम्राज्यवाद के आर्थिक राजनीतिक एवं सैनिक हितों की पूर्ति करना।

(2) कच्चे माल के मुख्य निर्यात केन्द्रों को बंदरगाही नगरों से जोड़ना जिससे कच्चे माल एवं खाद्यान्न प्राप्ति में सुगमता हो और साथ ही ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को भारत के एक बड़े बाजार तक पहुँचाना।

(3) सेना के तीव्र आवागमन को सुनिश्चित करना जिससे भारतीय प्रतिक्रिया को आसानी से दबाया जा सके।

(4) ब्रिटिश उद्योगपतियों एवं कंपनियों को भारत में निवेश के लिए प्रेरितकर उन्हें लाभ पहुँचाना।

विकास की स्वरूपगत विशेषता

(1) भारत में रेलवे के निर्माण के लिए ब्रिटिश

कंपनियों को 5% लाभ की गारंटी दी गयी।

(2) रेलवे लाइन के विकास में भारत के आर्थिक सामाजिक विकास का ध्यान नहीं रखा गया।

(3) रेलवे के विकास में अनावश्यक खर्च भी किया गया।

(4) अपने आरंभिक दौर में रेलवे वित्तीय दृष्टि से घाटे में रही, किन्तु फिर भी लाभांश दिया गया।

प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

(1) भारत के आंतरिक बाजारों का जुड़ाव हुआ।

(2) राजनीतिक प्रशासनिक एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(3) छुआछूत जाति-पाँति की भावना हतोत्साहित हुई।

(4) राष्ट्रवाद की भावना के विकास में सहायता मिली।

नकारात्मक प्रभाव

(1) भारत में रेलवे का विकास एक धन निकासी का माध्यम बना। इस तरह पूंजी का अभाव भारत में हुआ। भारत एक पिछड़े हुए राष्ट्र के रूप में सामने आया।

(2) हस्तशिल्प उद्योगों की पतन की प्रक्रिया में तीव्रता आयी।

(3) भारत में खाद्यान्नों की निकासी कर अकाल की स्थिति उत्पन्न की।

(4) रेलवे की माल भाड़ा दरें भारतीय व्यापारियों के अनुकूल नहीं थी। अतः व्यापारिक लाभ भी मुख्यतः ब्रिटिश को ही मिला।

Q. मार्क्स- "जिस देश में कोयला और लोहा उपलब्ध हो और उस देश में परिवहन तंत्र का मशीनीकरण हो जाए तो उस देश को औद्योगीकरण से कोई नहीं रोक सकता अर्थात आधुनिक औद्योगीकरण रेलवे से होकर आयेगा।"

पक्ष में - रेलवे औद्योगीकरण कैसे लाता है

यह भारत के संदर्भ में कैसा है (रेलवे ने औद्योगीकरण नहीं किया)

वस्तुतः कोयला एवं लोहा आधारभूत उद्योगों के विकास के लिए एक प्रमुख तत्व है। लौह उद्योग के विकास से अन्य औद्योगिक विकास हेतु मशीनों एवं कलपुर्जों की आवश्यकता होती है। ऐसे में यह लौह उद्योग परिवहन से संबंधित तंत्र के मशीनीकरण ~~से~~ का मार्ग भी प्रशस्त करता है। अतः रेलवे से संबंधित अन्य सहायक उद्योगों का विकास भी होता है। विभिन्न औद्योगिक इकाईयों में कार्यरत लोगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अन्य सहायक उपभोक्ता उद्योग भी विकसित होते हैं। इस तरह एक औद्योगिक वातावरण तैयार होता है। रेलवे के माध्यम से औद्योगीकरण की स्थिति को हम ब्रिटेन, इटली जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में देखते हैं। इस दृष्टि से मार्क्स का कथन सही साबित होता है

किन्तु भारत के संदर्भ में यह कथन लागू नहीं हो पाता। भारत में अत्यन्त

तीव्र गति से और थोड़े ही समय में रेलवे का अत्यधिक विकास हुआ किन्तु यहाँ औद्योगीकरण नहीं हुआ। वस्तुतः भारत एक उपनिवेश था और ब्रिटिश अपने देश के आर्थिक औद्योगिक हित को ध्यान में रखते हुए तथा भारत में अपनी राजनीतिक, सैनिक आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए रेलवे लाइन का विकास करते हैं, रेलवे से संबंधित सभी कलपुर्जों, रेल लाइन का निर्माण ब्रिटेन के उद्योगों में होता था। ऐसे में औद्योगीकरण भारत में कैसे होता। बल्कि रेलवे ने तो भारत में हस्तशिल्पों के पतन की प्रक्रिया तीव्र की। धन की निकासी को संस्थागत रूप दिया। इस तरह भारत का वि-औद्योगीकरण ~~किया। इस तरह हम कह सकते है~~ कि रेलवे ने भारत का औद्योगीकरण नहीं औपनिवेशीकरण किया।

Q2 "रेलवे ने भारत में वही किया जो अन्यत्र किया।" टिप्पणी करें।

कथन का आशय- उपरोक्त कथन रेलवे एवं औद्योगीकरण के संदर्भ में है

* रेलवे से अन्य देशों में विकास-(पश्चिमी देशों। औद्योगीकरण के लिए)

* भारत के संदर्भ में क्या किया-

अन्यत्र नहीं किया
(1) विऔद्योगीकरण
(2) धन का निकासी
(3) अकाल की बारंबारता
(4) औपनिवेशीकरण

⇒ जो अन्यत्र किया वह भारत में भी किया- सकारात्मक पहलू।

निष्कर्ष

रेलवे ने भारत में वैसा किया, जैसा अन्यत्र नहीं किया।

Q3 रेलवे ने भारत में वह नहीं किया जो अन्यत्र किया

धन की निकासी

- अर्थ
- स्रोत
- प्रक्रिया
- प्रभाव

अर्थ

भारतीय धन का ब्रिटेन में जाना और बदले में भारतीयों को कुछ भी प्राप्त न होना धन की निकासी है।

स्रोत

(1)* वेतन भत्ते कंपनी के अधिकारियों के

(2)* कंपनियों के अंशधारकों को दिया जाने वाला लाभांश जो भारतीय राजस्व पर आधारित था

(3) युद्धों के लिए लिया गया ऋण और उसका भुगतान भारतीय कोष से

(4) ब्रिटेन में रखा गये भारतीय धन कोष पर भारत को ऋण मिलता था। इस पर दिया गया ब्याज

(5) भारतीय साम्राज्य की सुरक्षा के लिए युद्ध व्यय का भार भी भारत पर - धन की निकासी

27/8/13

स्रोत

(1) कंपनी के अधिकारियों के वेतन भत्ते।

(2) कंपनी के शेयरधारकों को दिया जाने वाला लाभांश।

(3) भारतीय सार्वजनिक ऋण पर दिया जाने वाला ब्याज।

(4) ब्रिटिश द्वारा व्यापार उद्योग एवं बागानों में लगायी गयी निजि पूंजी की आय।

(5) ब्रिटेन में स्थित भारत सचीव एवं उसके आफिस का खर्च जो गृह व्यय के रूप में जाना जाता है।

(6) भारत में सैन्य एवं अन्य सामग्री की ~~की~~ की गयी खरीद।

(7) लंदन में रखा गया एक सुरक्षित कोष जो भारतीय धन से निर्मित था किन्तु जिस पर ~~भारतीयों~~ को कोई ~~ब्याज~~ नहीं मिला।

प्रक्रिया

1757 में प्लासी विजय के पश्चात बंगाल की लूट आरंभ हुई। और फिर 1765 में बंगाल

की दिवानी प्राप्त कर धन की निकासी की प्रक्रिया का संस्थागत स्वरूप सामने आया और निवेश की प्रक्रिया के माध्यम से धन की निकासी आगे बढ़ी तत्पश्चात भारत में विकास के नाम पर ब्रिटिश द्वारा आरोपित किया गया वह सभी व्यय जैसे रेलवे एवं अन्य प्रशासनिक संरचनाएं इसी निकासी प्रक्रिया का रूप था।

प्रभाव

भारतीय अर्थव्यवस्था जर्जर हो गयी। अत्यधिक भूराजस्व वसूलकर इसका एक बड़ा भाग ब्रिटेन गया तो दूसरी तरफ इसी के माध्यम से भारत में पुलिस प्रशासन एवं सेना खड़ी कर भारतीयों पर दमन चक्र भी चलाया गया।

(2) भारत में पूंजी का संचय नहीं हो पाया फलतः औद्योगिक विकास अवरुद्ध हुआ

भारतीय जनता पर करों का बोझ बढ़ता गया। अतः भारत का निर्धनीकरण हुआ और उसी गति से इंग्लैण्ड समृद्ध हुआ।

धन निकासी अवधारणा के आने से ब्रिटिश के शोषक चरित्र का खुलासा हुआ। फलतः भारतीय बुद्धिजीवियों को ब्रिटिश द्वारा भारतीयों के ~~शुभ पुचक~~ शुभचिंतक होने का दावा एक धोखा नजर आया और फिर ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध शुरु हुआ। राष्ट्रवादी भावनायें तीव्र हुई। इस भावना ने आर्थिक राष्ट्रवाद को प्रेरित किया और आगे के सभी राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में भारतीयों ने एक स्वर से इस ~~बिन्दु~~ पर ब्रिटिश का विरोध किया।

ब्रिटिश द्वारा विकसित ~~संरचार~~ संरचनाएं
(1) सिविल सेवा
(2) रेलवे
(3) शिक्षण संस्था
(4) संचार
(5) सुरक्षा

ब्रिटिश पक्ष - इन संरचनाओं की सेवाएं भारतीयों को मिली। इस आधार पर भारत का शोषण नहीं हुआ।

Q "हमारी व्यवस्था बहुत कुछ स्पंज की तरह कार्य करती है जो गंगा तट से सारी अच्छी चिजों को सोख लेती है और टेम्स नदी के किनारे निचोड़ दी जाती है।" टिप्पणी करें। 150 शब्द

संकेत-

(1) कथन का आशय — धन की निकासी के संदर्भ में है।

(2) धन की निकासी का अर्थ
|
स्रोत
प्रक्रिया
परिणाम

Q "भारतीय राजाओं द्वारा कर लेना सूर्य द्वारा भूमि से पानी लेने के समान था जो पुनः वर्षा के रूप में वर्षा के रूप में उर्वर बनाने के लिए वापस आता था किन्तु अंग्रेजों द्वारा लिया गया धन भारत में वर्षा न करके इंग्लैण्ड में वर्षा करता था।" टिप्पणी कीजिए।

⇒ उपरोक्त वाली ही उत्तर होगा।

Q अंग्रेजों ने जिन आर्थिक नीतियों का अनुसरण किया उन से भारतीय अर्थव्यवस्था ने औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का रूप धारण कर लिया। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था की परंपरागत संरचना का विघटन हुआ। कृषि, ग्रामीण विकास एवं हमारे उद्योगों के संदर्भ में यह कैसे घटित हुआ। 200 शब्द

संकेत

(1) ब्रिटिश नीतियों का उद्देश्य क्या था?
* भारत से आर्थिक लाभ प्राप्त करने हेतु
* ब्रिटिश हितों को पूरा करना

(2) विभिन्न आर्थिक नीतियां
* भूराजस्व की नीति — * विशेषता एवं प्रभाव
* प्रभाव ज्यादा लिखना है

* कृषि का वाणिज्यीकरण — प्रभाव
(I) खाद्यान्न उत्पादन में कमी
↓
अकाल
(II) कृषि पर बोझ

(3) औद्योगिक नीति- विऔद्योगिकरण-

प्रभाव- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन।

निष्कर्ष

पहली बार ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने गाँवों को दुष्प्रभावित किया। कृषि उद्योग संबंधों वाली अर्थव्यवस्था का विघटन हो गया और फलतः जहां भारत बसता था वह जर्जर हुआ अर्थात गांव उजड़े कृषक वर्ग तबाह हुए। इस तरह भारत तबाह हुआ।

Q 19वीं सदी में मुक्त व्यापार की नीति ने किस प्रकार भारतीय कपड़ा एवं कुटीर उद्योगों को हानि पहुंचायी। टिप्पणी कीजिए। 200 शब्द

संकेत

(1) मुक्त व्यापार नीति का उद्देश्य क्या था?

(2) इस नीति ने भारतीय कुटीर उद्योगों का पतन कैसे किया -

(3) पतन का प्रभाव

निष्कर्ष- इस तरह कृषि और उद्योग का परंपरागत

संबंध समाप्त हो गया और भारत पिछड़े देश के रूप में सामने आया।

Q भारत में समय- समय पर अनेक शासक वर्ग आये और भारत में अपना शासन स्थापित किया किन्तु ब्रिटिश शासन में पहली बार गांवों मे ने गहरे स्तर पर बदलाव महसूस किया। समीक्षा कीजिए। 200 शब्द

संकेत

(1) ब्रिटिश पूर्व स्थिति - भारत में प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक शक, कुषाण, हूण भी तुर्की, मुगल आये और सत्ता स्थापित की इन्होंने अपने क्षेत्र की राजनीतिक, प्रशासनिक संरचना के कुछ तत्वों को भारत में लागू किया और फिर भारतीय शासक हो कर रहे। परंपरागत भारतीय अर्थव्यवस्था का ढांचा पूर्ववत बना रहा।

(2) किन्तु 18वीं सदी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश ने भारत में जिस शासन की स्थापना की

उसे औपनिवेशिक स्वरूप प्रदान किया और इसी क्रम में आर्थिक, प्रशासनिक नीतियों को लागू किया जिनका ग्रामीण भारत पर गहरा प्रभाव पड़ा।

नीतियां - (I) भूराजस्व नीति

(II) कृषि का वाणिज्यीकरण

(III) विऔद्योगीकरण की नीति

प्रशासनिक - (IV) रेलवे / पुलिस / सेना / सिविल सेवा / कानून व्यवस्था

इन नीतियों का प्रभाव

* किसान तबाह
* शिल्पकार बेरोजगार
* साहूकार, महाजनी प्रथा का शोषणकारी स्वरूप सामने आया
* जमिदार किसान संबंध तनावपूर्ण
* कृषक आदिवासी विद्रोह हुए गाँवों अशांत हुए।

2 "यह दूसरे की पत्नी के श्रृंगार-पटार पर खर्च करने की तरह है।" (तिलक) टिप्पणी करें। 100 शब्द

संकेत -

(1) कथन का आशय - यह रेलवे ~~भारत से~~ एवं धन निकासी को संकेतित करता है।

(2) धन निकासी का अर्थ -

(3) धन निकासी-स्रोत - रेलवे के विकास के नाम पर भारत द्वारा दिया जाना वाला धन

- रेलवे पर कंपनी को लाभांश की गारन्टी
- रेलवे के विकास के लिए लिया गया कर्ज एवं देय ब्याज

निष्कर्ष

रेलवे से ब्रिटिश औद्योगीकरण को प्रोत्साहन मिला। पूंजीपतियों को लाभ मिला जबकि भारत ने सिर्फ रेलवे पर व्यय किया।

Q रेलवे का विकास • सार्वजनिक जोखिम पर नीजि उद्यम का रोचक उदाहरण प्रस्तुत करता है। टिप्पणी। 200/150 शब्द

संकेत

(1) भारत में रेलवे विकास का उद्देश्य-
- आर्थिक, सैनिक, प्रशासनिक

(2) रेलवे विकास का स्वरूप-
(I) ब्रिटिश कंपनियों को लाभांश की गारन्टी दी गयी।
(II) रेलवे के लिए ब्रिटिश पूंजी को आमंत्रित किया गया।
(III) सार्वजनिक ~~स्तं~~ ना लिया गया
⇓
निजी ~~चीजें~~ उद्यम- इंग्लैण्ड में पूंजीपतियों, उद्योग पतियों को लाभ मिला।

निष्कर्ष

निःसन्देह ब्रिटेन में पूंजीवाद को बढ़ावा मिला, जबकि भारत में धन की निकासी तीव्र हुई।

1/18/13

ब्रिटिश प्रशासनिक नीति

- देशी रियासतों के प्रति नीति
  - I (1757) आरंभ से 1813 — घेरे की नीति
  - II 1813 - 58 — अधीनस्थ पृथक्करण की नीति
  - III 1858 - 1935 — अधीनस्थ संघ की नीति
  - IV 1935 – समान संघ की नीति (आखिर में नहीं आयी)
- ब्रिटिश साम्राज्यवादी विस्तार की नीति
  - सहायक संधि प्रणाली
  - डलहौजी की हड़प नीति (गोद निषेध नीति)

एक राजनीतिक शक्ति पर दूसरी राजनीतिक शक्ति का नियंत्रण एवं प्रभुत्व की स्थापना ही सर्वोच्च सत्ता है। ब्रिटिश हितों को ध्यान में रखकर विभिन्न नीतियों का निर्माण किया गया। ये नीतियां थी-

ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता के विकास के चरण

घेरे की नीति (Policy of ring fence) 1757-1813

यह कंपनी का आरंभिक काल था। अतः कंपनी ने भारतीय राज्यों के प्रति सीमित उत्तरदायित्व एवं सीमित हस्तक्षेप की नीति का पालन किया। कंपनी का उद्देश्य अपने नवस्थापित राज्य को सुरक्षित रखना था। साथ ही भारत की शक्तियों के साथ बराबरी का स्तर प्राप्त करना भी था। कंपनी इस [illegible] भी [illegible] थी कि [illegible] वह अपनी सुरक्षा के लिए पूरे से [illegible] रह सकेगी और इसी क्रम में मैसूर मराठों के साथ संघर्ष भी किया। साथ ही कंपनी सहायक संधि प्रणाली के माध्यम से भारतीय राज्यों पर अपना प्रभाव भी स्थापित कर रहे थे।

अधीनस्थ पृथक्करण की नीति (1813-1858)

Policy of subordinate ~~union~~ isolation

इस दौर में यूरोप में नेपोलियन का पतन हो गया और ब्रिटेन के लिए चुनौती समाप्त हो गयी। दूसरी तरफ ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के कारण कच्चे माल की आवश्यकता और एक बड़े बाजार की जरूरत महसूस की जा रही थी। ब्रिटिश सरकार के ऊपर इंग्लैंड के पूंजीपतियों का भी दबाव था कि ईस्ट इण्डिया कंपनी के व्यापारिक अधिकार को समाप्त कर [illegible] जाए। अतः ब्रिटिश [illegible] अधिनियम के तहत मुक्त व्यापार की नीति को लागू किया और इसी क्रम में राज्यों को मिला लेने की नीति लागू की गयी। कंपनी ने घोषित किया कि जहाँ कहीं संभव हो रियासतों को मिलाया जाए और इसी क्रम में लार्ड हेस्टिंग्स एवं डलहौजी जैसे विस्तारवादी शासक भारत भेजे गये।

और डलहौजी के समय तो कुशासन के आरोप एवं गोद निषेध प्रथा के आधार पर बड़ी संख्या में राज्यों को मिलाया गया। इस तरह यह काल ब्रिटिश साम्राज्यवाद का और मुक्त व्यापार की नीति का चरम काल था।

अधीनस्थ संघ की नीति 1858-1935

ब्रिटिश के विलय एवं हस्तक्षेप की नीति से उत्पन्न असंतोष जब 1857 का सिपाही विद्रोह हुआ तो ब्रिटेन ने अपनी नीतियों पर पुनर्विचार किया। इस विद्रोह के दौरान अंग्रेजों का साथ कई देशी रियासतों ने दिया। अतः अब ब्रिटेन ने राज्यों से सहयोग की नीति अपनायी गयी। और इसी क्रम में घोषणा की गयी कि ब्रिटिश ताज अपने प्रदेशों का विस्तार नहीं करेगा। अतः विलय की नीति त्याग दी गयी। इस नीति के पीछे उद्देश्य यह था कि देशी राज्य भारतीय जनअसंतोष रोकें

में मदद करेगी। [illegible] ने ब्रिटिश सरकार एवं भारतीय जनता के असंतोष के बीच एक तटरोध का कार्य करेगी। इसीलिए देशी राज्यों के प्रति नरम नीति अपनायी गयी।)

किन्तु इसी प्रकार लार्ड मिंटो ने कहा कि "हम यदि आपको शासन का अधिकार देते हैं तो आपसे अपेक्षा करते हैं कि आप अपनी प्रजा के अधिकारों का ध्यान रखें।" [illegible] को [illegible] के [illegible] ने देशी राज्यों [illegible] अपना नियंत्रण बनाये रखने का एक बहाना था। राजाओं को अपनी इच्छा के अनुरूप हटाया जा सकता था जैसा कि बड़ौदा के गायकवाड़ के संबंध में किया गया था। इस तरह ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता अपने अधिकारों को किसी न किसी रूप में बनाये रखना चाहती थी।

समान संघ की नीति

1935 के अधिनियम के तहत कहा गया कि एक संघ का निर्माण होगा किन्तु जब आधी से अधिक रियासतें इसका समर्थन करेंगी तभी यह अस्तित्व में आयेगा। रियासतों ने नहीं किया अतः संघ अस्तित्व में नहीं आया।

ब्रिटिश ने अगस्त प्रस्ताव, क्रिप्स मिशन, कैबिनेट मिशन, माउंटबेटन योजना के माध्यम से समय समय पर अपनी सर्वोच्चता को प्रदर्शित किया और 1947 में आजादी के साथ ही यह सर्वोच्चता समाप्त हुई। यह सर्वोच्च सत्ता भारत के आधुनिक प्रशासनिक संरचना के निर्माण, रेलवे संचार साधनों के विकास, सड़क निर्माण, न्यायिक प्रणाली की एकरूपता, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास

आदि के लिए उत्तरदायी मानी जाती है किन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि सर्वोच्च सत्ता ने इन संरचनाओं का निर्माण भारतीय जनता के हितों को ध्यान में रखकर नहीं किया, बल्कि उनका मूल लक्ष्य तो ब्रिटिश औपनिवेशिक हित थे।

सहायक संधि प्रणाली

- पृष्ठभूमि
- विशेषताएं
  - प्रावधान
- मूल्यांकन
  - हानि — भारतीय
  - लाभ — ब्रिटिश

देशी राज्य — ब्रिटिश राज्य

(1) ब्रिटिश सेना रखेगा और इसका खर्च देगा

(2) विदेश नीति गिरवी

(3) ब्रिटिश रेजीडेंट

(4) किसी यूरोपीय को नियुक्त नहीं करेगा

सर्वोच्च सत्ता सर्वश्रेष्ठ ही बनी रहेगी। इसे बदली हुई परिस्थितियों में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। स्पष्ट करें। 150 शब्द

(1) आधार: ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता के संदर्भ में कहा जाता कि विलय की नीति लागू करने के बाद भी [illegible] देशी राज्यों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करना चाहिए।

(2) सर्वोच्चता के ब्रिटिश सर्वोच्चता के [illegible] — [illegible] नीतियों का [illegible]

(3) सर्वश्रेष्ठता का काल — विलय की नीति

(4) विलय नीति का त्याग — 1857 के विद्रोह के कारण

किन्तु मेयो के कथन से स्पष्ट है कि ~~[illegible]~~ सर्वश्रेष्ठता बनाये रखने का प्रयास था।

वेलेजली ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार के लिए एक सैद्धान्तिक ढांचा तैयार किया और इसी के अन्तर्गत सहायक संधि प्रणाली को लागू किया। वेलेजली के उद्देश्य

वेलेजली के उद्देश्य/ सहायक संधि के लिए उत्तरदायी परिस्थितियां

(1) ब्रिटिश कंपनी को भारत की सर्वोच्च शक्ति बनाना।

(2) [illegible]

(3) [illegible] की नीति [illegible] रही थी और [illegible] ब्रिटिश के भारतीय उपनिवेश पर हमले की आशंका थी तथा [illegible] शक्ति मैसूर और के राज्य प्रमुख संबंध कायम किये हुए था। अतः ऐसी राजनीतिक प्रणाली की आवश्यकता थी जो भारतीय शक्तियों को फ्रांसीसियों से दूर कर सके और

साथ ब्रिटिश वस्तुओं के निकास के लिए अनुकूल वातावरण बना है।

विशेषताएं

(1) संधि करने वाला देशी राज्य कंपनी की सर्वोच्चता [illegible] किसी यूरोपीय या ब्रिटेन के शत्रु राज्य के व्यक्ति को अपने यहां नौकरी नहीं देगा।

(2) देशी राज्यों की [illegible] अंग्रेजों के अधीन होगा (युद्ध [illegible] [illegible] [illegible])

(3) देशी राज्यों में एक ब्रिटिश सेना रखेगी जिसका खर्च देशी राज्य देगा

(4) देशी राज्य में एक अंग्रेज प्रतिनिधि होगा

मूल्यांकन

कंपनी को लाभ

फ्रांसीसियों का प्रभाव भारतीय

राज्य से समाप्त

(2) देशी राज्यों को निःशस्त्र कर एक दूसरे से अलग कर दिया गया।

(3) कंपनी, को भारतीय राज्यों से एक बड़ी सेना तैयार करने में मदद मिली।

(4) कंपनी की सेना सीमित राजनीतिक सीमाओं से आगे निकल गयी।

भारतीय राज्यों को हानि-

(1) देशी राज्यों ने अपनी सुरक्षा के बदले स्वतन्त्रता [illegible] खो दी।

(2) ब्रिटिश रेजिडेंट आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करते थे। और शासकों को शासन चलाने में रुचि ही समाप्त हो गयी।

(3) ~~देशी राज्यों की~~ अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

(4) देशी शासक अकर्मण्य एवं विलासी हो गये क्योंकि उन्हें ब्रिटिश सुरक्षा प्राप्त थी।

ब्रिटिश को हानि

देशी राज्यों के आपसी मामलों में हस्तक्षेप करने से अंग्रे. युद्धों का सामना करना पड़ा जिसका आर्थिक बोझ कंपनी पर पड़ा। जैसे पेशवा के साथ की गई [illegible] संधि। अंग्रेजों को मराठों के साथ युद्ध में उलझा दिया।

18/8/13

डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति (1848-1856)

विचार — साधन

- साधन
  - युद्ध
    - पंजाब [illegible]
  - कुशासन का आरोप
    - अवध
  - हड़प की नीति / गोद निषेध ↑ शांति की नीति
    - [illegible]

→ ब्रिटिश साम्राज्यवाद [illegible]

[illegible]

[illegible]

आधार पर [illegible] अंतर्गत [illegible] रियासतों का विलय किया गया।

विलय - व्यपगत की नीति
↓
गोद निषेध नीति (Doctrine of lapse

पैतृक वारिस न होने के स्थिति में स्वतंत्र [illegible]

[illegible]

नीति का आधार

[illegible]

[illegible] रियासतों में कोई निश्चित स्थायी नीति नहीं थी। फलतः इस नीति का कायम रहते हुए रियासतों में साम्राज्यवादी विस्तार का साधन रहते बना

दिया।

क्रियान्वयन

अंग्रेजों ने [illegible] राज्य को [illegible] लेने से पूर्व अनुमति अनिवार्य नहीं होगी। इन्होंने इस नीति के तहत राज्यों को [illegible] नीतियों के लिए [illegible]

[illegible]

नीति की समीक्षा

इस नीति के [illegible]

[illegible]

[illegible] प्रमुख [illegible] साम्राज्य [illegible] राजनैतिक [illegible] इसी के [illegible] नहीं [illegible] प्राप्त की थी।

डलहौजी की नीति का प्रभाव

(1) ब्रिटिश साम्राज्यवाद का आधार मजबूत

(2) आर्थिक संसाधनों पर ब्रिटिश का नियंत्रण बढ़ा
(3) मुक्त व्यापार के सिद्धांत की चरम अवस्था के दौर मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद का चरम विकास भी हुआ। इस तरह विलय की नीति एवं मुक्त व्यापार की नीति में सीधा संबंध था।
(4) डलहौजी ने भारत के मानचित्र को इस गति और पूर्णता से परिवर्तित किया जो किसी अन्य सैन्य अभियान से संभव नहीं था।

नकारात्मक प्रभाव

(1) [illegible] विद्रोह [illegible]
(2) [illegible] भारतीयों को [illegible] बनाया था। [illegible]
(3) अवध का विलय एक बड़ी भूल माना जाता है क्योंकि ब्रिटिश सेना मे बड़ी संख्या में अवध के सिपाही शामिल थे और इस विलय से असंतुष्ट होकर [illegible]

सेना का विद्रोह सैनिक विद्रोह के रूप में सामने आया।

ब्रिटिश सामाजिक - सांस्कृतिक नीति

- पृष्ठभूमि
- विभिन्न चरण
  - I 1765 - 1813 (अहस्तक्षेप नीति)
  - II 1813 - 1858 (सक्रिय हस्तक्षेप नीति) बेंटिक, डलहौजी
  - III 1858 - 1885 (निष्क्रिय नीति)
  - IV 1885 के बाद (राष्ट्रवादी के दबाव में नीति बनायी)
- प्रभाव
  - सकारात्मक
  - नकारात्मक
- समाज सुधारक

Q. "हम तो नाम मात्र का शासन करते हैं यह तो आप हैं जो वास्तविक शासक हैं।" (बेंटिक)

बेंटिक की नीति पर बेंथम के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए

राज्य के विस्तार एवं आर्थिक प्रशासनिक नियंत्रण के साथ-साथ भारत के सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में भी ब्रिटिश द्वारा हस्तक्षेप किया गया। [illegible] आक्रमण [illegible] पर ब्रिटिश [illegible] नीतियों में परिवर्तन [illegible] सामाजिक सांस्कृतिक हस्तक्षेप का [illegible] भारत [illegible] वाली नीति पर चलकर अपने औपनिवेशिक हितों को पूरा करना था और इसी क्रम में [illegible]

प्रथम चरण (1757-1813) - अहस्तक्षेप की नीति

क्योंकि ईस्ट इण्डिया कंपनी को [illegible] का सामना करना पड़ता। इस काल में कंपनी के एक वर्ग ने भारतीय शिक्षा ~~एवं संस्कृति~~ के अध्ययन पर बल दिया जैसे-

विलियम जोन्स
जोनाथन डंकन
विल्किन्स आदि

इन्होंने भारतीय ग्रंथों जैसे गीता, मनुस्मृति [illegible] का अंग्रेजी में अनुवाद [illegible] भारतीय समाज, संस्कृति को समझने के लिए प्रयास किया है। इस अध्ययन से भारत पर [illegible] शासन करने का प्रयास किया। इसी [illegible]

[illegible]

imp <u>दूसरा चरण</u> (1813-1858) - हस्तक्षेप की नीति

<u>उत्तरदायी परिस्थितियां</u>

[illegible]

इवांजेलिकल [illegible]

की [illegible]

इसके अलावा [illegible] लोगों के [illegible]

राज्य को समाज में [illegible] शिक्षा लागू [illegible]

और कानून के माध्यम से सुधार किया जाए

इस विचारधारा से निर्देशित होकर [illegible]

को भारत के [illegible] [illegible] बनाया जाए

और इसने विभिन्न देशों में व्यापार किया,

(2) औद्योगिक क्रांति के कारण ब्रिटेन को एक बड़े बाजार की जरूरत थी जहाँ वस्तुओं की बिक्री आसानी से किया जा सके। इसके लिए जरूरी था कि भारत के [illegible] [illegible] [illegible] आर्थिक आधुनिकीकरण किया जाए।

(3) [illegible] ब्रिटेन के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

(4) प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से भारतीय ब्रिटिश को पता है कि शासक वर्गों और [illegible] [illegible] भारत पर नियंत्रण रख सकेगा।

तीसरा चरण - 1858-85

1857 के विद्रोह के [illegible]

[illegible]

सकारात्मक प्रभाव

[illegible]
... ब्रिटिश नीतियों ने ... एक ... मध्य वर्ग के उदय को संभव बनाया। इस वर्ग ने आगे चलकर ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों की समीक्षा प्रस्तुत कर अंग्रेजों के

शोषणकारी स्वरूप को उजागर किया।

(2) विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कानून बनाये गये। जिससे समाज में जागरूकता आयी।

(3) भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला।

नकारात्मक प्रभाव

(1) ब्रिटिश शिक्षा नीति से आम भारतीय अशिक्षित रह गये। फलतः भारतीयों में अपनी संस्कृति एवं विरासत को [illegible] हुई। [illegible]

निष्कर्ष

ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियां औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थी। भारत का आधुनिकीकरण करना इनका लक्ष्य नहीं था। वास्तविक सुधार नहीं किये गये जो ब्रिटिश के आर्थिक राजनीतिक नीतियों के सहायक थे। यह बात जरूर है कि इन नीतियों के फलस्वरूप

अनेक सामाजिक [illegible] बने। [illegible]
शिक्षित वर्ग [illegible] भारतीय [illegible]
शोषण को पहचाना और शोषण के विरुद्ध
लोगों को [illegible] किया।

प्रमुख कानून

(1) [illegible] निषेधक कानून 1829 —
(2) विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 — [illegible]
सती प्रथा का निषेधक कानून [illegible]

[illegible]

[illegible] विधवाओं को [illegible]
[illegible]
पैतृक अधिकार [illegible]
पुनर्विवाह [illegible]

[illegible] 13/8/13

आधुनिक शिक्षा
(ब्रिटिश शिक्षा नीति)

उद्देश्य   विकास   सीमाएं   योगदान

आंग्ल-प्राच्य विवाद

(1) भारत ने पश्चिम के हथौड़े से ही पश्चिम की बेड़ियों को काट डाला। स्पष्ट करें।

उद्देश्य:-

(1) [illegible] ... अंग्रेजी [illegible] ... शासन को [illegible] ... और [illegible] ... इसके [illegible]

(2) भारतीय कर्मचारियों को एक [illegible] के लिए ... और कम वेतन पर काम पर रखे [illegible]

(3) शिक्षित भारतीय [illegible] निर्मित वस्तुओं के बेहतर खरीदार होंगे

विकास

का नेतृत्व [illegible] बंधु ।

कि भारतीय भाषा से शिक्षा दी जाए ।

[illegible] से शिक्षा

प्रौपनिवेशिक [illegible]

[illegible]

[illegible] रतीय शिक्षा [illegible]
[illegible] औपनिवेशिकों [illegible]
और [illegible] को शिक्षा [illegible] के [illegible]
औपनिवेशिक [illegible] को [illegible] शुरू [illegible]।

[illegible] ने [illegible] कि ऊपर के
स्तर पर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षित
[illegible] और शिक्षित भारतीय निचले [illegible] के
[illegible]। [illegible] [illegible] थ्योरी

[illegible]

[illegible]

कमजोर पक्ष-

[illegible]

में विषम समझता था।

सामाजिक दृष्टि से महिला शिक्षा की [illegible]

[illegible] शिक्षा [illegible]

[illegible]

[illegible] ककरण [illegible]

[illegible] एकाधिकार [illegible]

( ) [illegible]

[illegible]

(हिंदू [illegible] अनिवार्य [illegible]

↓

अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण किया

मुस्लिम के लिए धर्म की भाषा अरबी/फारसी पिछड़ा रह गया

रोजगार प्राप्त कर लिया — रोजगार प्राप्त नहीं किया और निर्धन रह गया।

→ सभी पदों पर [illegible] हो गया और [illegible] दूर हो गया। इस दूरी को [illegible] ने अंग्रेजी भाषा की [illegible] -शिक्षा के द्वारा [illegible] राष्ट्रवादिता को [illegible] लिया।

सकारात्मक परिणाम

[illegible] आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर पश्चिम के प्रगतिशील विचारों को भारत में भी प्रसारित किया और राष्ट्रीयता पैदा की। [illegible] ~~[illegible]~~ आर्थिक [illegible] और विदेशी [illegible] चेहरे को उजागर कर दिया और राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करके गुलामी से मुक्ति में सहायता की। इसी तर्क से यह कहा जाता है कि भारतीयों ने पाश्चात्य

खण्डों से ही पारिचय की बेडियों को काट डाला।
संचार एवं संवाद के एकीकरण में अंग्रेजी भाषा की भूमिका भी रही।

निष्कर्ष

ब्रिटिश शिक्षा नीति औपनिवेशिक हितो से परिचालित थी। इसका लक्ष्य तो एक भारतीय अंग्रेज तैयार करना था जिसके माध्यम से वह अपने आर्थिक राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा कर सके। इस तरह भारत का आधुनिकीकरण करना इस शिक्षा नीति का लक्ष्य नहीं था। हाँ यह बात जरूर है कि भारतीयों ने इस आधुनिक शिक्षा को प्राप्त कर उस दृष्टिकोण को प्राप्त किया जो ब्रिटिश औपनिवेशिक चेहरे की पहचान कर पाया।

x ——— x

भारतीय प्रतिक्रिया

- किसान विद्रोह
- जनजातीय विद्रोह
- 1857 का विद्रोह

किसान विद्रोह

- कारण
- स्वरूप
  - 19वीं सदी
  - 20वीं सदी
- प्रमुख विद्रोह
- प्रभाव

(1) आर्थिक नीति

(i) भू राजस्व नीति

(ii) कृषि का वाणिज्यीकरण

(iii) विऔद्योगीकरण

भूराजस्व

अधिकतम भू राजस्व वसूल

↓

* जमींदारों एवं साहूकारों द्वारा शोषण
* नकदी फसलों फसलों की खेती

खाद्यान्नों में कमी

↓

अकाल

(2) प्रशासनिक नीति

(i) रेलवे

(ii) का[illegible]

(3) सामाजिक- सांस्कृतिक नीति
(4) शैक्षणिक नीति

19वीं सदी में किसानों का विद्रोह जमींदारों के शोषण के खिलाफ था। वे महारानी के रैय्यत बने रहना चाहते थे। इसका स्वरूप संकीर्ण था।

20वीं सदी में किसान संगठन के माध्यम से संगठित हो गये। राष्ट्रीय आंदोलन के बड़े वर्ग के रूप में भूमिका निभाया।

20/8/13

ब्रिटिश भूराजस्व नीति ने अत्यधिक लगान की राशि किसानों पर आरोपित की। कृषि में बिचौलियों का प्रवेश बढ़ा और जमींदारों के शोषण से किसान तबाह हुआ और साथ ही महाजनी प्रथा को भी बढ़ावा मिला। फलतः किसानों के हाथ से जमीन निकलने लगी। इन सब का सम्मिलित परिणाम कृषक असंतोष के रूप में सामने आया।

(2) कृषि के वाणिज्यीकरण ने किसानों को नकदी

की खेती के लिए बाध्य किया। फलतः खाद्यान्नों में कमी और अकालों की बारंबारता में वृद्धि हुई। फलतः किसानों के असंतोष में वृद्धि हुई।

(3) प्रथम विश्व युद्ध के समय वस्तुओं की कमी हुई तो दूसरी तरफ मूल्यों में वृद्धि हुई किसानों की क्रय शक्ति कम थी। अतः किसानों की कठिनाईयां बढ़ी।

(4) ब्रिटिश प्रशासनिक रेलवे नीति ने भी कृषक समस्याओं में वृद्धि की।

(5) 1917 की रूस की साम्यवादी क्रांति ने किसानों को एकजुट होकर समस्या समाधान के लिए प्रेरित किया। फलतः किसानों के संगठित विद्रोह सामने आये।

(6) ~~कि~~ 20वीं सदी में अनेक किसान संगठन का निर्माण हुआ जिन्होंने ~~क~~ कृषक हितों की मांगों को उठाकर आंदोलन प्रारम्भ किया।

स्वरूप-

19वीं सदी में किसान आंदोलन

स्थानीय समस्याओं एवं तत्कालिक हितों से जुड़े हुए थे। शोषण के विरुद्ध ये भारतीय जमिंदारों, शासक वर्ग को उत्तरदायी मानकर संघर्ष कर रहे थे और ब्रिटिश महारानी की रैय्यत होने पर बल दे रहे थे। इस तरह किसानों की दृष्टि अभी व्यापक नहीं हुई थी।

(2) इन आंदोलनों का स्वरूप मालिकावादी यानी अंधविश्वास से मुक्त था और हिंसक गतिविधियों से मुक्त रहा।

(3) 20वीं सदी में किसान आंदोलन की दृष्टि व्यापक हो गयी और वे अपने दूरवर्ती मुख्य शोषण-कर्ता की पहचान कर सके। फलतः ब्रिटिश राज्य से मुक्ति की बात करने लगे।

(4) आर्थिक मांगों के साथ-साथ राजनीतिक मांगें भी जुड़ गयी। जैसे राजनीतिक कैदियों की रिहाई, स्वराज एवं स्वतंत्रता की मांग अर्थात अब वे राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गये।

(5) आंदोलन का नेतृत्व प्रायः प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय

स्तर के नेताओं द्वारा किया-जैसे चंपारण में गांधी नेतृत्वकर्ता थे।

(6) आंदोलन समाजवादी विचारधारा से भी जुड़ गया और इसी क्रम में कई किसान संगठन बने।

(7) किसान आंदोलन नवीन राजनीतिक पद्धतियों से जुड़ गये और अब वे जेल भरो आंदोलन प्रदर्शन आदि के माध्यम से अपनी मांगो को पूरा करवाने का प्रयत्न करने लगे।

मोपला विद्रोह - (1921-22) केरल - मालाबार तट

मोपला - किसान - मुसलमान
जमींदार - हिन्दू

मोपला विद्रोह का मूल कारण तो आर्थिक असंतोष था। किसान अपने शोषण के लिए आवाज उठा रहे थे। किन्तु इस विद्रोह को साम्प्रदायिक स्वरूप दे दिया गया।

जनजातीय विद्रोह

कारण — स्वरूप — असफलता के कारण

जनजातियों की विशेषता
* स्वतंत्रता
* अपनी अलग पहचान

इन विशेषताओं पर ब्रिटिश नीतियों द्वारा चोट

विद्रोह का कारण
(1) जनजातियों के वनाधिकार पर चोट
(2) जनजातियों पर करारोपण
(3) नरबलि, बाल हत्या का निषेध
(4) परम्पराओं में हस्तक्षेप
(5) जनजातियों को बंधक बनाकर कार्यों में लगाया गया
(6) जबरन ईसाई बनाया गया

असफलता —
(1) संगठन का अभाव
(2) पुराने अस्त्र शस्त्र
(3) अंधविश्वास से युक्त / (ब्रिटिश जब बंदूक चलायेंगे तो उनकी बंदूकें पानी हो जायेंगी) मसीहाई दृष्टिकोण
(4) क्षेत्रीय हितों से युक्त

कारण

(1) ब्रिटिश आर्थिक प्रशासनिक नीतियों ने जनजातियों के जीवन में हस्तक्षेप किया। वस्तुतः सरकार की वन नीति ने वनों को सरकारी सम्पत्ति घोषित कर दिया जिससे जनजातियों का परम्परागत अधिकार समाप्त हुआ। अतः उनमें असंतोष पैदा हुआ।

(2) ब्रिटिश भू राजस्व नीति ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जमींदारों, महाजनों, ठेकेदारों ~~(दिकू)~~ (दीकू) का प्रवेश कराया। फलतः आदिवासी अपनी भूमि से बेदखल किये जाने लगे। अतः उनमें असंतोष पनपा।

(3) इसी तरह उनके परंपरागत रीतिरिवाजों में हस्तक्षेप हुआ। ब्रिटिश सरकार की कर नीति ने उन्हें मदिरा बनाने से रोका। ~~फलतः उन्होंने~~ विरोध किया।

(4) ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासनिक संरचना का विस्तार जनजातीय क्षेत्रों में भी हुआ। और इसी क्रम में पुलिस थाने, सैनिक छावनियां, कंपनी के कानून लागू किये गये जिससे उनके स्वतंत्र

जीवन में हस्तक्षेप हुआ।

(5) ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीति के तहत आदिवासियों को असभ्य एवं जंगली करार देकर ईसाई धर्म प्रचारकों ने उनके धर्म परिवर्तन पर बल दिया। फलतः आक्रोश पैदा हुआ।

(6) सरकार ने जब कानून द्वारा नरबलि रोकने का प्रयास किया तो जनजातियों ने इसे अपने रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप मानकर विरोध किया।

(7) ब्रिटिश कंपनी ने जनजातियों को मजदूरी के लिए बाध्यकर उनके मूल स्थान से विस्थापित किया। फलतः असंतोष उपजा। (रेलवे निर्माण, बागानी कृषि, सड़क निर्माण आदि)

असफलता के कारण

(1) विद्रोह की कोई पूर्व नियोजित योजना नहीं बनायी। साथ ही आदिवासी वर्ग का सम्पूर्ण वर्ग का सहयोग नहीं ले पाये।

(2) आदिवासी तीर कमान से लैस थे जबकि ब्रिटिश सेना आधुनिक हथियारों से युक्त थी।
(3) आदिवासी अंधविश्वास से युक्त थे उनका मानना था कि वे चमत्कारिक शक्तियों के आधार पर ब्रिटिश को पराजित कर देंगे किन्तु ऐसा कोई चमत्कार हुआ नहीं और वे संघर्ष में पराजित हो गये।

स्वरूप:

(1) विद्रोहों का स्वरूप स्थानीय था। वस्तुतः मुद्दे और नेतृत्वकर्ता दोनों स्थानीय थे।
(2) ये मसीहावादी स्वरूप से युक्त थे अर्थात चमत्कारिक शक्तियों पर अटूट विश्वास था।
(3) इन्होंने सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का कोई ठोस विकल्प प्रस्तुत नहीं किया। इस तरह से ये विद्रोह की ही श्रेणी में आते हैं।
(4) हिंसक स्वरूप से युक्त थे।
(5) यह जातीय आधार पर संगठित थे। वर्गीय आधार पर नहीं जो इनकी कमियों

दृष्टिकोण का परिचायक था।
(6) एक दृष्टि से ये पुर्नस्थापनावादी स्वरूप से मुक्त थे क्योंकि ये उसी पुरातन सामाजिक धार्मिक संरचना में लौटना चाह रहे थे।

मुंडा विद्रोह/ (1899)
उलगुन विद्रोह/
महान हलचल

कारण

(1) मुंडा विद्रोह का मुख्य लक्ष्य एक शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना था जिसमें कर्मकाण्डो से हटकर एकेश्वरवाद की स्थापना पर बल देता था।
(3) ब्रिटिश करो की न अदायगी ~~कर~~ करके वह एक मुण्डा राज्य की स्थापना करना चाहता था। इस दृष्टि से यह विद्रोह सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक स्वरूप से युक्त था।
(4) बिरसा मुण्डा ने अपने राजनीतिक आंदोलन का

सेनापति दान्का मुंडा को बनाया।

इस राजनीतिक आंदोलन के कार्यक्रम थे—

(1) सरकारी नियमों एवं उनके अधिकारियों की अवहेलना करना।

(2) मालगुजारी पर रोक।

(3) जमीन पर रैयतों का कब्जा करना।

(4) शस्त्र विद्रोह की योजना।

(5)

1857 का विद्रोह

- कारण
- प्रसार
- असफलता के कारण
- परिणाम
  - परिणामों का मूल्यांकन
- स्वरूप

स्वरूप

बर्बरता और सभ्यता का संघर्ष – नस्लवादी दृष्टिकोण
(भारतीय) (अंग्रेज)

राष्ट्रीय आंदोलन / स्वतंत्रता संग्राम

असफलता के कारण

(1) विद्रोह का प्रसार सीमित था। फलतः ब्रिटिश को दमन करने में आसानी हुई। ~~सभी वर्गों~~ का समर्थन विद्रोहियों को नहीं मिला।

(2) देसी शासक, सामंत अंग्रेजों के पक्ष में रहे।

(3) मध्य वर्ग आंदोलन से अलग रहा।

विद्रोहियों का कोई केन्द्रीय संगठन नहीं था और न ही कोई अखिल भारतीय नेतृत्व सामने आया।

(5) अस्त्र-शस्त्र एवं कूटनीतिक रूप से अंग्रेज विद्रोहियों से सक्षम थे।

परिणाम

- कंपनी का शासन भारत में समाप्त कर दिया गया तथा ब्रिटेन का प्रत्यक्ष शासन शुरु हुआ। इसी क्रम में इंग्लैण्ड में भारत सचिव एवं उसके परिषद का गठन किया गया। यह भारत सचिव ब्रिटिश सरकार का मंत्री था। लंदन में स्थित बोर्ड आफ कंट्रोल का अंत कर दिया गया। इसी के साथ भारत में द्वैध शासन की समाप्ति हुई और प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश सरकार की सत्ता सामने आयी।

ब्रिटिश सरकार कंपनी

BOC

मंत्री

1784 के पिट्स के इण्डिया एक्ट से

भारत

गर्वनर जनरल — कंपनी द्वारा नियुक्त

अप्रत्यक्ष रूप से — ब्रिटिश सरकार BOC के माध्यम से नियंत्रण

ब्रिटिश ताज ने अब अपने प्रदेशों की विस्तार की नीति को त्याग दिया और देशी शासकों के साथ सम्मान का व्यवहार करने की घोषणा की।

भारतीय सैनिकों की संख्या को यूरोपीय सैनिकों की संख्या से संतुलित करने का प्रयास किया गया।

भारत के सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में अहस्तक्षेप की नीति अपनायी गयी।

भारत पर नियंत्रण बनाये रखने के लिए आगे चलकर समाचार पत्रों पर नियंत्रण लगाया गया। सिविल सेवा परीक्षा में भारतीयों को रोकने के लिए उम्र सीमा में कमी की गयी।

परिणामों का मूल्यांकन

1857 के विद्रोह के पश्चात कंपनी के शासन का समाप्त कर क्राउन के शासन का आगमन ब्रिटिश सरकार के लिए चाहे युग परिवर्तन का सूचक रहा हो किन्तु भारतीयों के संदर्भ में यह परिवर्तन नहीं हुआ बल्कि निरंतरता ही रही। वस्तुतः पहले भी ब्रिटिश सरकार बोर्ड आफ कंट्रोल के माध्यम से कंपनी और भारत पर अपना नियंत्रण रखती थी। (बोर्ड आफ कंट्रोल का अध्यक्ष सरकार का एक मंत्री था) और कंपनी के शासन का अंत कर जिस बोर्ड आफ कन्ट्रोल को समाप्त कर लंदन में भारत सचिव एवं उसकी परिषद का निर्माण किया गया ~~वह~~ ब्रिटिश सरकार का ही एक मंत्री था। इस तरह नियंत्रण करने वाला पहले भी वही था अर्थात ब्रिटिश। इतना ही नहीं नीतियों में जो परिवर्तन लाया गया औपनिवेशिक हित ही प्रधान बने रहे।

देशी राज्यों के प्रति विलय की नीति इसलिए छोड़ दी गयी थी कि वे भारतीय असंतोष के विरुद्ध एक बांध का कार्य कर सकते थे।

भारतीयों के लिए परिवर्तन इस दृष्टिकोण से था कि अब सदा के लिए मुगल सम्राट का पद समाप्त हो गया और भारत ब्रिटिश सरकार का गुलाम बन गया। हां इतना जरूर है कि इस विद्रोह का सकारात्मक परिणाम भारतीयों पर यह पड़ा कि भारतीय जनता के अंदर आत्मविश्वास एवं संघर्ष की भावना बढ़ी और इसने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक सशक्त संघर्ष की मिशाल प्रस्तुत की।

स्वरूप

सैनिक स्वरूप

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम

ब्रिटिश सरकार ने इसे सिपाही विद्रोह के रूप में परिभाषित करते हुए बताया कि वेतन

भत्ते एवं सुविधाओं को लेकर सिपाहियों में कुछ असंतोष व्याप्त था और उन्होंने सरकारी आज्ञा का उल्लंघन कर अपने असंतोष को व्यक्त किया। यह व्याख्या भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी दृष्टिकोण पर आधारित है। इसलिए इसे मात्र सिपाही विद्रोह दिखाकर साबित करने का प्रयास किया गया कि ब्रिटिश सामाजिक आर्थिक, प्रशासनिक नीतियों में कोई कमियाँ नहीं थी। यह तो सिपाहियों की महत्वाकांक्षा थी। किन्तु इसे सिपाही विद्रोह नहीं माना जा सकता क्योंकि भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग भी किसान के रूप में इसमें शामिल था और फिर सभी भारतीय सिपाही ब्रिटिश के विरुद्ध नहीं थे बल्कि साथ भी दे रहे थे। इस तरह सिपाही विद्रोह से शुरु होकर यह भारतीय जनअसंतोष की अभिव्यक्ति बन गया।

वस्तुतः ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों से भारत का बहुसंख्यक किसान वर्ग शोषित हो रहा था और सिपाही इसी का बेटा था।

राष्ट्रीय आंदोलन

Q यह न तो प्रथम, न राष्ट्रीय और न स्वतंत्रता संग्राम था।

प्रथम क्यों नहीं?

1857 के विद्रोह के पूर्व भी ब्रिटिश को अनेक मौकों पर सशस्त्र विरोध का सामना करना पड़ा था। वहाबी आंदोलन एवं संथाल विद्रोह ने ब्रिटिश के विरुद्ध सशस्त्र चुनौती उत्पन्न की थी।

राष्ट्रीय नहीं था

विद्रोह का प्रसार संपूर्ण भारत में नहीं था और सभी वर्गों की भागीदारी नहीं थी बल्कि आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्य वर्ग इससे अलग रहा और फिर राष्ट्रीयता की भावना रह

काल में विकसित नहीं हुई थी और विद्रोही अपनी-अपनी समस्याओं के कारण एकजुट हुए थे। इसलिए यह राष्ट्रीय नहीं था।

स्वतंत्रता संग्राम नहीं था –

विद्रोहियों ने कहीं भी भारत की आजादी की मांग नहीं की और फिर अनेक समूह ब्रिटिश का साथ दे रहे थे। इसलिए स्वतंत्रता संग्राम नहीं था।

कैसे यह प्रथम था –

पहली बार ब्रिटिश को सशस्त्र विरोध की गंभीर चुनौती का सामना करना ~~पड़ा और भारत~~ बाहर से ~~भी सैनिकों~~ को बुलाना पड़ा। इतना ही नहीं विभिन्न क्षेत्रों के अलग-अलग सैन्य कमाण्डर नियुक्त किये गये जो इस विद्रोह की व्यापकता को दर्शाती है। फिर विद्रोह के पश्चात पहली बार ऐसा हुआ कि ब्रिटिश ने

आमूल-चूल परिवर्तन लाते हुए कंपनी का शासन समाप्त कर ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष शासन स्थापित किया और विलय की नीति त्याग दी। अतः प्रयास न होते हुए भी प्रभावों के स्तर पर प्रयास था।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम -

यह सही है कि विद्रोह क्षेत्रीय स्वरूप लिये हुए था और समाज का मध्य वर्ग तटस्थ था और अनेक भारतीय ब्रिटिश का साथ भी दे रहे थे किन्तु यह भी सत्य है कि जब क्षेत्रीयता अपना व्यापक स्वरूप ग्रहण करती है तब एक राष्ट्र होने की भौगोलिक सांस्कृतिक अर्हताएं पूरी होती हैं। इस विद्रोह ने भारत के ~~विभिन्न क्षेत्रों~~ और ~~लोगों~~ को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एकजुट होने की अपील की। अतः राष्ट्रीयता के भावना के विकास में इसकी भूमिका प्रेरक की रही।

जहाँ तक स्वतंत्रता संग्राम के लिए समस्त नागरिकों के भाग लेने की बात है तो अन्य स्थानों, अमेरीकी स्वतंत्रता संग्राम में भी यह दिखायी पड़ता है कि नागरिकों का सम्पूर्ण भाग ब्रिटिश के विरुद्ध नहीं था। अनेक अमेरीका अंग्रेजों का साथ दे रहे थे और यही स्थिति भारत में भी थी। इतना ही नहीं 1942 के भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के परिपक्व अवस्था में भी अनेक भारतीय अंग्रेजों का साथ दे रहे थे, फिर भी हम इसे स्वतंत्रता संग्राम ही कहते हैं। इसी तरह 1857 के विद्रोह में चाहे सम्पूर्ण जन की भागीदारी ब्रिटिश के विरुद्ध न हुई हो तो भी इसका स्वरूप स्वतंत्रता संग्राम से ~~से~~ इस आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता। ~~जहाँ~~

जहाँ तक माँग ~~का~~ प्रश्न है आजादी की माँग चाहे न रही हो किन्तु विद्रोहियों ने सरकारी प्रतीकों को निशाना

बनाया जो इस बात का प्रमाण है कि वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध थी। वस्तुतः इसी विद्रोह का स्वरूप मात्र उसके लक्ष्य से ही निर्धारित नही होता बल्कि इस बात से भी निर्धारित होता है कि उसने क्या प्रभाव छोड़ा। इसलिए 1857 का विद्रोह भारतीय राष्ट्रीयता के विकास और उसको स्वतंत्र करने की राह में प्रेरणा स्रोत बना रहा।

पुनर्स्थापनावादी स्वरूप-

1857 के विद्रोह में विद्रोहियों द्वारा उठाये गये कदम इस विद्रोह के पुनर्स्थापनावादी स्वरूप की ओर संकेत करते हैं। वस्तुतः विद्रोही ब्रिटिश सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, औपनिवेशिक नीतियों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करते हैं क्योंकि इन नीतियों से उनका आर्थिक शोषण हो रहा था वहीं दूसरी तरफ सामाजिक

धार्मिक - परंपरा और विश्वासों पर चोट की जा रही थी। अतः विद्रोह कर उन्होंने वर्तमान शासन के विरुद्ध अपना असंतोष दिखाया और बहादुर शाह जफर को अपना नेता घोषित कर उस पुरातन व्यवस्था को स्थापित करने का प्रयास किया जहाँ नस्लवादी भेदभाव और शोषण नहीं हो रहा था। इस दृष्टि से विद्रोही पुनर्स्थापनावादी स्वरूप को स्थापित करते हैं।

x——————————x

25/8/13

सामाजिक-धार्मिक आंदोलन (19वीं सदी)

उदय के कारण — स्वरूप — परिणाम

कारण

(1) आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवियों में चेतना आयी कि औपनिवेशिक शासन का मूल कारण तो भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में मौजूद कमजोरियां है। अतः उन्हें दूर करना चाहिए।

(2) पाश्चात्य मानवतावादी चिंतन ने सुधारों के प्रति चेतना जागृत की।

(3) कुछ यूरोपीय विद्वानों ने भारत की प्राचीन ~~सांस्कृतिक उपलब्धियों~~ को श्रेष्ठ बताया। अतः उसी गौरव को स्थापित करने के लिए तत्कालीन समाज में मौजूद कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया।

(4) ईसाईकरण की प्रवृत्ति ने अपने समाज एवं धर्म को बचाने के लिए सुधारों पर बल दिया।

(5) पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से अंग्रेजों द्वारा भारतीयों के प्रति किये जाने वाले अपमान-जनक व्यवहारों का ज्ञान होना। अतः अपने धर्म एवं समाज सुधार पर बल दिया।

स्वरूप

(1) मूलतः सामाजिक सुधार के स्वरूप से युक्त है, क्योंकि सामाजिक कुरीतियों का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था; अतः धर्म के सुधार के बगैर समाज सुधार संभव नहीं था।

(2) यह मध्यवर्गीय स्वरूप से युक्त था।

⇓

नेतृत्व कर्ता – शिक्षित समूह / मध्यवर्ग
प्रसार – शहरी क्षेत्रों तक
साधन – पत्र-पत्रिकाओं में लेख
मांग – वर्ण व्यवस्था की समाप्ति, मूर्ति पूजा बेकार है, सती प्रथा की समाप्ति, बाल विवाह की समाप्ति, विधवा
प्रभाव एवं परिणाम

मध्यवर्गीय स्वरूप -

इस आंदोलन का नेतृत्वकर्ता शिक्षित मध्यवर्ग था। आंदोलन का प्रचार प्रसार भी मुख्यत: नगरीय शहरी क्षेत्रों में था और प्रचार प्रसार के साधन के रूप में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इस दृष्टि से यह मध्यवर्गीय स्वरूप लिये हुए था

शैक्षणिक-स्वरूप -

सभी सुधार आंदोलन के नेताओं ने शिक्षा पर बल दिया। अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की।

सुधारवादी स्वरूप -

सुधारकों ने अपने सामाजिक धार्मिक बुराईयों को दूर करने के क्रम में धार्मिक आडंबरों पर चोट की न कि उस धर्म को त्यागने की बात की।

महिला मुक्ति स्वरूप

सभी नेताओं ने नारी मुक्ति

पर बल देते हुए महिला शिक्षा, समानता की बात की फिर पर्दा प्रथा, सती प्रथा, विधवा प्रथा, शिशु हत्या (जो स्त्री बाल हत्या से जुड़ा है।) का विरोध किया। यह वर्तमान महिला सशक्तिकरण का प्रयास कहा जा सकता है।

यूरोपीय पुनर्जागरण के समान नहीं -

यूरोपीय पुनर्जागरण के तत्व मानवतावाद, समानता, लौकिक जीवन पर बल यहाँ भी दिखते हैं किन्तु वैज्ञानिक अन्वेषण, भौगोलिक खोजें, साहसिक मनोभाव, कला एवं साहित्य का शास्त्रीय विकास जैसे मूल तत्व यहाँ नहीं दिखते।

सीमाएं -

(1) मध्यवर्गीय स्वरूप से युक्त है।

(2) अतीत पर अत्यधिक बल देने से तर्क और वैज्ञानिकता पर चोट पहुँची।

(3) धार्मिक दार्शनिक पहलु पर ही विशेष बल

दिया गया।

(५) आंदोलन में हिन्दू धर्म के संदर्भ में अतीत का गुणगान प्राचीन काल तक सीमित रहा और मध्यकाल को अवनति के रूप में देखा गया। फलतः सम्प्रदायिकता को भी बढ़ावा मिला।

महत्व / परिणाम

(1) भारतीयों में आत्म विश्वास और सम्मान की भावना जागृत हुई। फलतः राष्ट्रीयता के विकास को प्रोत्साहन मिला।

(2) शिक्षा पर बल दिया गया, एवं पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। फलतः जनजागरुकता बढ़ी, इसने भी राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित किया।

(3) कर्मकाण्डों एवं आडम्बरों पर चोट से धर्म का सरलीकरण हुआ। जातीय धार्मिक बंधन कमजोर पड़े। फलतः राष्ट्रीय चेतना आगे बढ़ी

(4) नारी मुक्ति के क्षेत्र में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

25/8/13

राजा राम मोहन राय (1774-1833)

उपलब्धियां
- धार्मिक क्षेत्र
- सामाजिक क्षेत्र / शिक्षा
- राजनीतिक
- मूल्यांकन

राजा राम मोहन राय

पश्चिमी तत्वों से युक्त (विदेशी)

देशी तत्वों से युक्त (पूर्व)

संश्लेषणकर्ता अंधानुकरण नहीं

ईसाई धर्म का प्रभाव
मानवतावादी तत्व
स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति
प्रेस कारिता का विकास
अंग्रेजी शिक्षा

बंगला भाषा का व्याकरण तैयार करते हैं
एकेश्वरवाद की स्थापना
कर्मकाण्ड का विरोध
उपनिषदों में विश्वास

Q पूर्व एवं पाश्चिम के संस्कृतियों के संश्लेषणकर्ता के रूप में राजा राम मोहन राय ।

⇒ राजनीतिक जन जागरूकता को लाने का श्रेय

राजा राम मोहन राय को आधुनिक भारत का पिता, नवजागरण का अग्रदूत पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों को मिलाने वाला कहा जाता है। राजा राम मोहन राय यूरोपीय पुनर्जागरण, प्रबोधनकालीन चिंतन से प्रभावित होकर मानवतावाद, तर्क आधुनिक मूल्यों पर बल देते हैं। इससे प्रेरित होकर विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने कार्य किया।

धार्मिक क्षेत्र में कर्मकाण्ड, आडम्बर, मूर्ति पूजा का विरोध किया और एकेश्वरवाद को सभी धर्मों का मूल बताया। उन्होंने उपनिषद द्वारा प्रतिपादित आत्मा की अमरता को स्वीकार किया। इसी क्रम में उन्होंने हिन्दू धर्म को स्वच्छ बनाने के लिए ब्रह्म समाज की स्थापना की। यह

समाज आचरण की शुद्धता पर बल देता था और इसके कार्यक्रमों में हिन्दू, मुस्लिम, इसाई सभी धर्मों के मूल तत्वों का समावेश था।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों एवं दर्शन में विश्वास करते हुए भी वे अंतिम रूप से मानव विवेक, तर्क पर बल देते थे। उनके अनुसार किसी भी पाश्चात्य या भारतीय सिद्धांत के सही या गलत को परखने की कसौटी मानव विवेक है। इसी संदर्भ में उन्होंने ईसाई धर्म के नैतिक मूल्यों की तो प्रशंसा की किन्तु चमत्कारिक शक्तियों एवं आडम्बर का विरोध किया। इस तरह वे पूर्व व पश्चिम के बीच भी एक संतुलन स्थापित करने में सफल रहे।

सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने भारत की सामाजिक कुरीतियों सती प्रथा, बाल विवाह, छुआछूत आदि का विरोध किया और स्त्री शिक्षा पर बल दिया। उनके प्रयासों से सती प्रथा निरोधक

कानून का निर्माण हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में वे आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे और अंग्रेजी को पाश्चिमी ज्ञान विज्ञान को समझने के लिए आवश्यक मानते थे। इसी क्रम में उन्होंने 1817 ई० में हिन्दू कालेज की स्थापना की। वहीं स्थानीय भाषा बंगला के विकास के लिए भी कार्य किया और बंगला व्याकरण का संकलन किया। 1825 में वेदांत कालेज की स्थापना की जहां सामाजिक एवं वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इस तरह पूर्व व पश्चिम का मेल कराने में सफल रहे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनकी भूमिका उल्लेखनीय रही। जिस तरह पाश्चिम में प्रेस की स्वतंत्रता पर बल दिया गया और जनजागरूकता का एक साधन माना गया, उसी तरह उन्होंने भारत में पत्रकारिता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ा और विभिन्न भाषाओं में पत्रों

का प्रकाशन किया। फारसी में 'मिरातुल अखबार' तो बंगला में 'संवाद कौमुदी' का प्रकाशन किया। इस तरह वे भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत कहलाये।

राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने जनतंत्र एवं राष्ट्रीयता के आंदोलन का समर्थन किया। 1821 में जब नेपल्स क्रांति (इटली एकीकरण के दौरान) की विफलता की सूचना मिली तो इस पर दुख व्यक्त किया और विभिन्न राष्ट्रों के बीच वे सहयोग के भी समर्थक थे। उन्होंने सिविल सेवा के भारतीयकरण की मांग की।

सीमाएं

मध्यवर्गीय स्वरूप से युक्त था। सुधारों का प्रभाव केवल शहरी वर्ग तक सीमित था।

आर्य समाज (दयानंद सरस्वती)

(1) 'वेदो की ओर लौटो' – पुर्नस्थापनावादी विचार
जहाँ
⇓
* बाल विवाह नही
* छुआ छूत नही
* कर्मकाण्ड नही

⇒(2) स्वराज और स्वदेशी की अवधारणा।

⇒(3) शिक्षा के क्षेत्र में –
/ पाश्चात्य शिक्षा – लाला हंसराज
\ गुरुकुल – श्रद्धानंद

⇒(4) आर्य समाज ने शुद्धि आंदोलन के माध्यम से पुनः लोगो को हिन्दू धर्म मे वापस लाया।

⇒(5) सामाजिक कार्य –
अकाल मे अनाज का वितरण

नकारात्मक प्रभाव

सम्प्रदायिकता का विकास हुआ

दयानंद सरस्वती ने 1875 ई॰ मे बाम्बे में आर्य समाज की स्थापना की जिसमें हिन्दू धर्म एवं समाज में सुधार पर बल दिया। इसी क्रम में इन्हें "हिन्दू लूथर" भी कहा जाता है।

(2) इन्होंने वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। यह उनके संकीर्ण दृष्टिकोण का परिचायक नहीं है। उन्होंने वेदों की व्याख्या आधुनिक संदर्भ में की और उस समाज को आदर्श बताया जहां बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा प्रथा, सती प्रथा नहीं थी और महिला को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था।

(3) दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज एवं स्वदेशी पर बल दिया। उनके अनुसार विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो किन्तु वह सुखदायक नहीं हो सकता। इस तरह राष्ट्रीय चेतना के विकास में भूमिका देखी जा सकती है। इसी क्रम में आर्य समाज ने "भारत भारतीयों के लिए" का नारा दिया।

(4) आर्य समाज ने कर्मकाण्ड जातिप्रथा की आलोचना की और शुद्धि आंदोलन चलाया अर्थात पहले के हिन्दुओं का यदि धर्मांतरण कर दिया गया हो तो वे आर्य समाजी पद्धति से शुद्ध होकर अपने परंपरागत धर्म मे लौट सकते थे। आर्य समाज की इस कार्यवाही ने हिंदुत्व के विचार को उग्र बनाया और इससे साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन मिला।

(5) आर्य समाज ने गहरे स्तर पर भारतीय समाज को प्रभावित किया, उसके शैक्षणिक कार्यक्रमों ने विभिन्न वर्गों को एक सूत्र मे बांधा और राष्ट्रीय चेतना को भी आगे बढ़ाया। आर्य समाज के अंतर्गत लाला हंसराज जैसे नेताओं ने ऐंग्लो वैदिक कालेज की स्थापना कर आधुनिक शिक्षा पर बल दिया तो दूसरी तरफ श्रद्धानंद जैसे नेताओं ने गुरुकुल की स्थापना कर परंपरागत शिक्षा पर बल दिया।

(६) आर्य समाज ने अकाल के दौरान सामाजिक कार्य करते हुए अनाजों का वितरण किया, असहायों की सहायता की। इन्ही संदर्भों के वह आज भी कार्यरत दिखायी देता है।

विवेकानंद

(1) मानव सेवा को ईश्वर सेवा का रूप दिया।
(2) "मध्यवर्ग के जिसने शिक्षा लेकर अन्य वर्गों को शिक्षित नहीं किया, देशद्रोही है।" – विवेकानंद

विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1898 में की जिसका मुख्य उद्देश्य 'दरिद्र नारायण' की सेवा करना था। इसके तहत संकट के समय चिकित्सा एवं अन्य सुविधाये प्रदान करने की बात कही गयी।

(2) विवेकानंद ने सभी धर्मों की बुनियादी एकता पर बल दिया और भारत के वैश्विक अलगाव के लिए भारतीयों की आलोचना की। उन्होंने जाति प्रथा, छुआछूत की आलोचना की

(3) विवेकानंद ने कहा कि जब तक लाखों लोग भूख एवं अज्ञान से ग्रस्त है मैं हर उस व्यक्ति को देशद्रोही कहूँगा जो उनके खर्च पर

शिक्षा प्राप्त करके भी ध्यान नहीं देता। यहाँ विवेकानंद शिक्षित मध्यवर्गीय भारतीयों के उत्तरदायित्व को संकेतित करते हैं और भारत के पिछड़ेपन का कारण स्वयं देश के लोगों को ठहराते हैं।

(4) विवेकानंद ने कहा कि मैं एक ईश्वर को मानता हूँ जो सभी आत्माओं की एक आत्मा है एवं सबसे ऊपर है। मेरा ईश्वर दुखी पीड़ित हर जाति का निर्धन मानव है। इस तरह से विवेकानंद ने मानव मात्र की सेवा की बात की। उनका यह मानवतावाद उनके वैश्विक दृष्टिकोण को पुष्ट करता है।

(5) विवेकानंद की प्रमुख शिष्या मार्गरेट नोबेल (निवेदिता) थी जो एक आयरिश महिला थी।

सैय्यद अहमद खां
↓
(अलीगढ़ आंदोलन)

उद्देश्य...

मुस्लिम समाज के पिछड़ेपन को दूर करना। आधुनिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हैं।

शिक्षा संस्थान की स्थापना के लिए — मुस्लिम समाज / अंग्रेजी सरकार

सैय्यद अहमद खां अंग्रेजों का सहयोग लेते हैं ताकि मुस्लिम समाज में सुधार कर सके।

सैय्यद अहमद खां अलीगढ़ आंदोलन के प्रवर्तक थे और कुरान में विश्वास रखते हुए कुरान की आधुनिक व्याख्या पर बल देते थे। उनका मुख्य लक्ष्य मुस्लिम समाज ~~की~~ के पिछड़ेपन को दूर करना और उनका आधुनिकीकरण करना था। इसलिए आधुनिक शिक्षा पर बल देकर रूढ़िवादी ~~धार्मिक~~ सामाजिक प्रथाओं जैसे पर्दा प्रथा, बहुविवाह, पीरी-मुरीदी प्रथा का विरोध किया।
(पीरी ↓ गुरु, मुरीदी ↓ शिष्य)

अपने मूल उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने अंग्रेजों का सहयोग प्राप्त किया और इसी क्रम में अलीगढ़ ऐंग्लो ओरियेंटल कालेज की स्थापना की। 8-

उन्होंने मुसलमानों को राजनीति से दूर रहने का सुझाव दिया क्योंकि तभी ब्रिटिश राज की सरकारी सहायता प्राप्त हो सकती थी। इसी क्रम में उन्होंने कांग्रेस के राजनीतिक कार्यक्रम की आलोचना की।

सैय्यद अहमद खां ने धार्मिक सहिष्णुता पर बल दिया और विभिन्न धर्मों में मौजूद एकता के तत्वों पर बात की। 1883 में उन्होंने कहा कि " हम दोनों धर्मों के लोग ~~भारत की~~ हवा पर जिंदा हैं। गंगा-यमुना का पवित्र जल पीते हैं। भारतीय भूमि की पैदावार खाकर जिंदा हैं। हम दोनों का रंग रूप देश में एक हो गया है।"

देवबंद स्कूल (1867) (सहारनपुर के पास)
⇓
अब्दुल रशीद गंगोही
कासिम ननौत्वी

देवबंद - परम्परागत इस्लाम / शुद्ध इस्लाम को बनाये रखने पर बल। ~~भारत~~,

- अलीगढ़ आंदोलन - आधुनिक शिक्षा की बात इसलिए अंग्रेजों का समर्थन

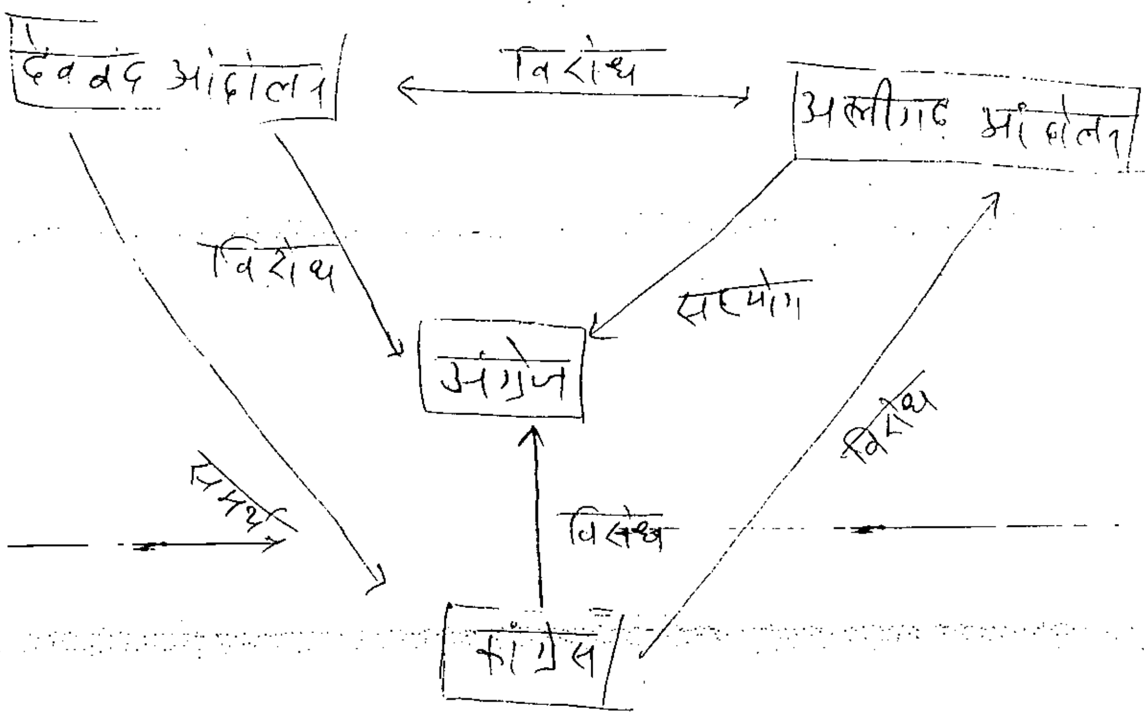

२५/३/13

राष्ट्रीय आंदोलन

- राष्ट्रवाद का उद्भव
- कांग्रेस स्थापना के संबंध में विवाद
- राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विकसित विचारधाराएं
  - उदारवादी
  - उग्रवादी
  - क्रांतिकारी
  - गांधीवादी
  - समाजवादी
- स्वतंत्रता एवं विभाजन

ब्रिटिश — आर्थिक लाभ / शोषण — भारत / भारतीय जनता

⇒ ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारतीय लोगों का आपस में जुड़ाव हुआ। समस्याओं का एकीकरण हुआ। ब्रिटिश हित एवं भारतीय हितों की टकराहट से उत्पन्न ऊर्जा राष्ट्रवाद। राष्ट्रवाद पूरी तरह से प्रक्रिया है। भारत में 19वीं सदी के उत्तरार्ध में दिखायी पड़ता है।

कारण

① ब्रिटिश आर्थिक नीतियां
② पाश्चात्य विचारधारा, शिक्षा, पत्रकारिता
③ भारतीय समाज सुधार आंदोलन — शिक्षा पर बल - इससे लोग जागरूक - शोषण के स्वरूप से परिचित एवं एकजुट
④ वर्णव्यवस्था एवं जाति प्रथा पर चोट - सामाजिक एकता
⑤ कुछ ब्रिटिश शासक भी उत्तरदायी हैं

प्रगतिशील

रिपन - इल्बर्ट बिल प्रस्तुत - श्वेत विद्रोह एवं बिल वापस नहीं

प्रतिक्रियावादी नीति

लिटन → वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट, सिविल सेवा के आयु कमी, दिल्ली दरबार, आर्म्स एक्ट

कर्जन ↓
* बंगाल विभाजन
* विश्वविद्यालय की स्वायत्ता पर अंकुश

इन नीतियों का परिणाम सकारात्मक रहे

उद्भव के कारण

(1) विदेशी आधिपत्य अर्थात ब्रिटिश शासन एवं प्रशासन की विदेशी एवं क्रूर प्रवृति भारत में मौजूद थी। फलतः भारतीय जनता एवं ब्रिटिश हितों के बीच टकराव शुरु हुआ और ऐसे में भारतीयों में एकजुटता बढ़ी।

(2) भारत का आर्थिक प्रशासनिक एकीकरण —

ब्रिटिश नीतियों ने यह एकीकरण किया, ब्रिटिश आर्थिक प्रशासनिक आवश्यकता एवं उसके अनुरूप बनायी गयी नीतियों ने भारत के विभिन्नताओं को एक सूत्र में बांधा तो तो दूसरी तरफ इन्ही ब्रिटिश नीतियों के फलस्वरूप पैदा हुई समस्याओं जैसे गरीबी, दोहन/शोषण, अकाल आदि की एकरूपता ने भारतीयों को एकजुट कर दिया। इस तरह एक साझे शत्रु की उपस्थिति एवं उसके पहचान ने लोगों को एकजुट कर दिया (सिविल सेवा, न्यायिक व्यवस्था, कानून प्रणाली, रेलवे आदि प्रशासनिक नीतियां)

(3) अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य चिंतन - भारत में आधुनिक शिक्षा के माध्यम से एक मध्य वर्ग का उदय हुआ जो औपनिवेशिक शोषण के स्वरूप को समझकर पाश्चात्य चिंतन के जनतंत्र, समानता, स्वतंत्रता की मांग भी करने लगा अर्थात पाश्चिमी हथौड़े ने राष्ट्रवादी भावना को आगे बढ़ाया।

(4) सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन =

इसने जनजागृति लाकर लोगों को एकजुट होने का मार्ग प्रशस्त किया भारतीयों के अंदर स्वाभिमान एवं गौरव की भावना जागृत की।

(5) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन - भी राष्ट्रवाद के विकास में प्रेरक की भूमिका निभाता है।

(6) लिटन एवं कर्जन जैसे प्रतिक्रियावादी शासकों की नीतियां

लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम, शस्त्र अधिनियम लाकर भारतीयों के साथ भेदभाव किया तो साथ ही सिविल सेवा परीक्षा में अधिकतम उम्र सीमा में कमी लाकर भारतीय मध्य वर्ग को

आक्रोशित कर दिया। अकाल के दौरान भी दिल्ली दरबार आयोजित कर भारतीय जन को असंतुष्ट कर दिया तो दूसरी तरफ कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा कर राष्ट्रवाद को उग्र रूप दे दिया। इसी संदर्भ में यह कहा जाता है कि कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(7) इलबर्ट बिल विवाद—

इसने भारतीयों को भी यूरोपीयों का मुकदमा सुनने का अधिकार प्रदान किया, किन्तु अंग्रेजों ने इसका संगठित होकर विरोध किया और अंततः बिल वापस ले लिया गया। इससे दो बातें स्पष्ट हुई (1) ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति भी चल रहे हैं। (2) संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगों को मनवाया जा सकता है। फलतः भारतीय एकजुटता को प्रोत्साहन मिला।

कांग्रेस

स्थापना के संबंध में विवाद — परिणाम/निष्कर्ष

विवाद

~~कांग्रेस~~

(1) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत

इस सिद्धांत के प्रतिपादक लाला लाजपत राय थे उन्होंने ह्यूम के जीवनीकार विलियम वेडरबर्न के कथन को आधार बनाकर 'यंग इण्डिया' के लेख में इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया और कहा कि कांग्रेस डफरीन के मस्तिष्क की उपज है। दरअसल भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए ब्रिटिश ने इस मंच का निर्माण किया था। लाला लाजपत राय ने यह आलोचना कांग्रेस के उदारवादी नेतृत्व के संबंध में कही थी।

(2) तड़ित चालक का सिद्धांत (Lightening Conductor)

इस सिद्धांत के प्रतिपादक गोपाल कृष्ण गोखले थे। उनके अनुसार सरकारी असंतोष से ~~बचने~~ बचने के लिए कांग्रेस के नेताओं ने

ह्यूम का प्रयोग किया। वस्तुत: यदि कांग्रेस का आरंभिक संस्थापक कोई ब्रिटिश नहीं होता तो यह संगठन आरंभ में ही ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकता था।

समीक्षा / निष्कर्ष

कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में 'सेफ्टी वाल्व' सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता क्योंकि डफरिन को स्वयं इसके गठन की जानकारी बाद में होती है जो ह्यूम के पत्रों के अध्ययन से पता चलता है और फिर आगे डफरिन ने स्वयं कांग्रेस की आलोचना की और कहा है कि यह मुट्ठी भर लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। अत: कांग्रेस की स्थापना को किसी एक व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज मानना ऐतिहासिक प्रवृत्तियों को न समझना है। कांग्रेस के पूर्व कई संस्थायें अस्तित्व में आ चुकी थी, राष्ट्रवाद का प्रसार हो रहा था।

ऐसे में भारतीय आशाओं तथा समस्याओं को एक मंच के माध्यम से प्रस्तुत करने के क्रम में कांग्रेस की स्थापना हुई जो अखिल भारतीय स्वरूप से युक्त था।

इंडियन एसोसिएशन (1876)

संस्थापक सुरेन्द्र नाथ बनर्जी थे। यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित थी। इसकी प्रेरणा मेज़िनी के इटली के एकीकरण के प्रयासों से मिलती है। इसके उद्देश्य थे

(1) भारत में जनमत तैयार करना।
(2) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना
(3) हिन्दू-मुस्लिम सम्पर्क बढ़ाना

इसे कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहते हैं।

उदारवादी चरण/आंदोलन

- विचारधारा
- कार्यपद्धति
- मांगें
- मूल्यांकन
  - योगदान
  - सीमाएं

कांग्रेस

उदारवादी | उग्रवादी चरण / विचारधारा

1885-1905 | 1905 —

* भारत में ब्रिटिश शासन बने रहना चाहिए।
* ब्रिटिश की मौजूदगी से भारत में आधुनिक रूप एवं पद्धतियां आ सकती हैं।
* जनतांत्रिक तरीके से भारत में क्रमिक परिवर्तन लाया जा सकता है।
* भारत में अब्रिटिश दल है। इनकी शिकायत इस दल से है। इसलिए ब्रिटिश के जनमत को पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से भारत की समस्याओं के संदर्भ में अवगत कराना।

मांगें (मध्यवर्गीय स्वरूप)

(1) सिविल सेवा का भारतीयकरण
(2) आर्म्स एक्ट की समाप्ति
(3) वायसराय की कौंसिल में भारतीय प्रतिनिधियों की संख्या बढ़ायी जाये।

सीमाएं -
(1) ब्रिटिश के औपनिवेशिक स्वरूप को समझने में असफल
(2) मांगों की मध्यवर्गीय संरचना
(3) जनता के साथ जुड़ाव नहीं

योगदान

ब्रिटिश शासन की आर्थिक समीक्षा

⇓

विभिन्न भारतीयों को एकजुट

⇓

औपनिवेशिक चरित्र का पर्दाफाश

विचारधारा

उदारवादी कांग्रेसी ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास रखते थे अर्थात ब्रिटिश संसद एवं ब्रिटिश जनता में इनका अटूट विश्वास था। अतः संवैधानिक पद्धति से सुधारों पर बल देते थे। उदारवादियों का

मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत के एक वरदान है। और यह वरदान भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक राष्ट्र की ओर ले जायेगा। इसलिए उन्होंने कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलगाव की बात नहीं की बल्कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत स्वशासन पर बल दिया।

(2) उदारवादियों का – मत था कि इंग्लैण्ड मे मौजूद ब्रिटिश शासन बहुत प्रगतिशील है। वहां संसदीय शासन प्रणाली है जहां जनता के अधिकार सुरक्षित हैं। नागरिकों को अपने समस्याओं को रखने का अधिकार है। उस शासन ने जिन आर्थिक प्रशासनिक नीतियों को वहां लागू किया उससे ब्रिटिश जनता एवं देश का विकास हो रहा है। कोई भेदभाव नही है। प्रेस एवं ~~पत्र पत्रिकाओं को स्वतंत्रता प्राप्त~~ है।

किन्तु भारत मे ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नही की गयी। यहां तो औपनिवेशिक नीतियों को

लागू कर भारतीयों को अधिकारों से वंचित किया गया। फलतः भारत में गरीबी, स्वनाग्रस्तता, अकाल जैसी समस्याएं भारत का मुख्य अभिलक्षण बन गयी। जो भारत में अनाब्रिटिश रूल का प्रमाण है।

(3) भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था। इस तरह इन्होंने जनआंदोलन पर बल नहीं दिया।

कार्य पद्धति -

(1) ये प्रार्थना पत्र, स्मरण पत्र और भाषण के माध्यम से अपनी मांग पूरी करवाना चाहते थे।

(2) संवैधानिक तरीके से मांग एवं रक्तहीन संघर्ष में विश्वास रखते थे।

(3) ब्रिटिश जनमत को प्रभावित कर सुधारों पर बल दिया। अतः लंदन में भी प्रचार कार्यों पर बल दिया।

मांग

(1) विधायिका में भारतीयों की संख्या बढ़ायी जाए
(2) स्वशासन प्राप्त हो (कनाडा एवं आस्ट्रेलिया की तरह)
(3) सिविल सेवा का भारतीयकरण एवं आयु सीमा

वृद्धि।

(4) सराक्त अधिनियम की समाप्ति

(5) सैन्य व्ययों में कटौती

(6) स्थायी बंदोबस्त अन्य क्षेत्रों में भी लागू हो।

योगदान

(1) राजनीतिक जागरण का कार्य किया।

(2) लोकतंत्र व स्वशासन की विचारधारा को लोकप्रिय बनाया।

(3) समाजवाद की आर्थिक समीक्षा, प्रत्यक्ष को और ब्रिटिश औपनिवेशिक चेहरे को उजागर किया। इस आर्थिक समीक्षा का राष्ट्रीय आंदोलन के प्रत्येक चरण में भारतीयों द्वारा उपयोग किया।

सीमाएं

(1) शिक्षित मध्य वर्ग तक आंदोलन सीमित रहा

(2) आम जनता की ताकत को आकलित करने में विफल

(3) लंबे समय तक ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाया

निष्कर्ष

उदारवादी आंदोलन को असफल नहीं कहा जा सकता। इसने भारतीयों में आरंभिक राजनीतिक चेतना जगायी और सबसे बढ़कर तो ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके भारत में उसके शासन के अब्रिटिश स्वरूप को उजागर किया।

29/8/13

उग्रवादी आंदोलन

- विचारधारा
- कार्यपद्धति
- परिणाम

निष्क्रिय प्रतिरोध
↓
अवसरवादिता

प्रदर्शन, असहयोग, अवसर मिलने पर हिंसा भी करना क्योंकि विपक्षी को शत्रु माना जाता है

सत्याग्रह
↓
- अनिवार्यतः अहिंसा का भाव
- किसी तरह की अवसरवादिता नहीं
- शत्रु के प्रति बदले की भावना नहीं इसलिए उसके हृदय परिवर्तन पर बल
- शत्रु को गलती का एहसास कराना कि वह गलत है।

साधन • धरना
• प्रदर्शन
• असहयोग

उग्रवादी आंदोलन - निष्क्रिय प्रतिरोध, गांधीवादी आंदोलन - सत्याग्रह

उग्रवादी आंदो. से सामाजिक आधार को विस्तार मिला - - -
महिला, पुरुष बच्चे, जमींदार, किसान, श्रमिक आदि शामिल

उग्रवादी आंदोलन से - साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला

उग्रवादी आंदोलन के उदय के कारण

(1) कांग्रेस की स्थापना के एक लंबे समय बाद भी जब कोई विशेष राजनीतिक उपलब्धि भारतीयों को प्राप्त नहीं हुई तो उनमें निराशा फैली और इसका परिणाम उग्रवादी चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में सामने आई।।

(2) आरंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा ब्रिटिश शासन की आर्थिक समीक्षा से उसका शोषक मूलक वास्तविक स्वरूप उजागर हो गया। अतः अब उससे न्याय की उम्मीद नहीं की जा सकती।

(3) श्री तिलक पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया फलतः भारतीयों में आक्रोश फैला।

(4) धर्म-सुधार आंदोलन ने भारतीयों में आत्म-विश्वास पैदा किया। विवेकानंद ने लिखा कि लंबी से लंबी रात्रि अब समाप्त होती जान पड़ रही है। हमारी मातृभूमि गहरी नींद से अब जाग रही है। इसी तरह अरविंद घोष ने कहा कि स्वतंत्रता हमारे जीवन का श्वास है।

(5) अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों ने भी भारतीय राष्ट्रवादी चेतना को उग्र बनाया। वस्तुतः 1890 में इथोपिया ने इटली को पराजित किया और 1905 में जापान ने रूस को पराजित किया। फलतः यूरोप की अपराजेयता का मिथक टूट गया।

(6) कर्जन की नीतियों ने उग्रवादी चेतना को आगे बढ़ाया। उसने कलकत्ता नगर निगम अधिनियम एवं विश्व विद्यालय अधिनियम लाकर यहां सरकारी नियंत्रण में वृद्धि की और फिर 1905 में बंगाल विभाजन को लागू कर दिया। इन सब कार्यवाहियों ने कांग्रेस के भीतर उग्र विचारधारा पैदा की।

विचारधारा -

उग्रवादी नेता लाल लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, अरविन्द घोष आदि विदेशी शासन से घृणा करते थे और अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की बात करते थे। इनका मत था कि भारतीयों की मुक्ति स्वयं के प्रयत्नों से होगी, अंग्रेजों की कृपा से नहीं। इसी क्रम में तिलक ने कहा कि 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे'। इस तरह

उग्रवादियों ने अपना लक्ष्य स्वराज घोषित किया। ये उग्रवादी ब्रिटिश न्याय प्रियता में विश्वास नहीं करते थे।

कार्य पद्धति

स्वशासन	स्वराज	पूर्ण स्वराज
ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत अधिकार	अंग्रेजों के शासन से मुक्ति किन्तु मुक्ति का स्तर निर्धारित नहीं/ अस्पष्ट	ब्रिटिश शासन से मुक्ति

कार्य पद्धति :-

(1) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

(2) स्वदेशी पर बल

(3) आत्म सहायता

(4) निष्क्रिय प्रतिरोध

इनके माध्यम से अन्यायपूर्ण कानूनों के उल्लंघन की बात कही गयी (यहाँ विरोधी के प्रति शत्रुता का भाव रहता है, अवसरवादिता के साथ हिंसा

शामिल होती है, जबकि सत्याग्रह में विरोधी के हृदय परिवर्तन पर बल दिया जाता है और इसके अहिंसा मूल तत्व होता है।)

(2) ये उग्रवादी प्रार्थना-पत्र, स्मरण पत्र जैसे साधनों पर विश्वास नहीं करते थे, इसलिए उदारवादी राजनीति को राजनीतिक भीख्र भिक्षावृत्ति कहते थे।

मूल्यांकन

योगदान

(1) राष्ट्रीय आंदोलन को आम जनता से जोड़ने का प्रयत्न किया। अतः उदारवादी राजनीति की तुलना में इसका सामाजिक आधार व्यापक था। स्वदेशी आंदोलन के संदर्भ में इसको समझा जा सकता है।

(2) राजनीतिक संघर्ष की पद्धति में बहिष्कार, जुलूस, स्वदेशी जैसे विचारों को लोकप्रिय बनाया। इस तरह गांधीवादी आंदोलन की पद्धतियां यहां देखी जा सकती हैं, यदि इसमें से हिंसा का तत्व निकाल दिया जाए।

(3) भारतीयों में आत्मविश्वास जागृत

सीमाएँ

(1) धार्मिक प्रतीकों पर बल दिया - जैसे रक्षाबंधन, गणेश महोत्सव, शिवाजी महोत्सव आदि जो किसी विशेष समुदाय से जुड़े थे फलतः - साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिला।

(2). उदारवादियों से वैचारिक मतभेद इतना बढ़ा कि सूरत में कांग्रेस का विभाजन हो गया फलतः राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर हुआ।

Q. - स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

उग्रवादी विचारधारा में मौजूद है। यह उग्रवादी आंदोलन को संकेतित करता है।

उदय के कारण

विचारधारा

कार्यपद्धति

मूल्यांकन

ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास नहीं किया बल्कि ब्रिटिश से मुक्ति की बात की।

बंगाल विभाजन (1905)

- पृष्ठभूमि
- कारण
- वास्तविक कारण (ब्रिटिश निहितार्थ)
- परिणाम

बंगाल
↓
ब्रिटिश शासन का केन्द्र
↓
विभिन्न ब्रिटिश नीतियाँ सर्वप्रथम यहाँ
↓
शिक्षा
↓
शिक्षित मध्यवर्ग
↓
शोषण के स्वरूप से परिचित
↓
नवजागरण — राजा राममोहन राय
↓
राष्ट्रवाद उग्र

बंगाल विभाजन

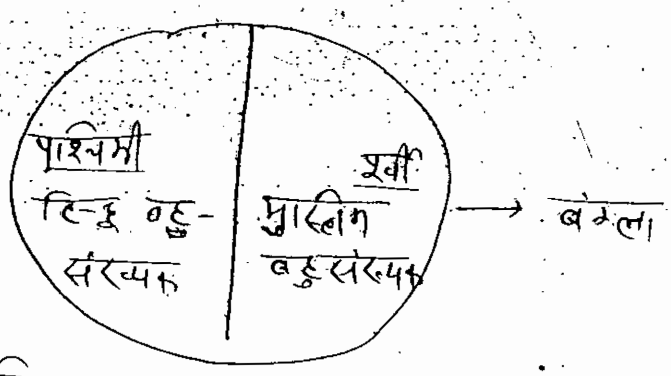

हिन्दू - उड़िया, हिंदी, बंगला

धार्मिक विभाजन
भाषायी विभाजन

पृष्ठभूमि

बंगाल ब्रिटिश सत्ता का केन्द्र था। अतः नवीन आधुनिक संरचनाएं जैसे शिक्षा, प्रशासन आदि का विकास यहीं हुआ जिससे शिक्षित भारतीय मध्यवर्ग ~~समान~~ सामने आया। सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन फलतः इस क्षेत्र से आरम्भ हुआ अर्थात नवजागरण का केन्द्र बना। आरंभिक राजनीतिक संस्थाएं भी इसी क्षेत्र से संबंधित थी इस तरह 19वीं सदी तक आते-आते बंगाल राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया और बंगाली राष्ट्रीयता

भारतीय राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित कर रही थी। अतः राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए ब्रिटिश ने इसको विभाजन जरूरी समझा।

कारण

कर्जन ने सरकारी दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए कहा कि प्रशासनिक सुविधा के लिए इसका विभाजन किया गया। (भौगोलिक विस्तार के कारण लूट-पाट अव्यवस्था होती थी। जनजीवन कष्टपूर्ण हो जाता था।)

वास्तविक कारण

बंगाल राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया था। अतः राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए इसको विभाजन किया गया। जैसा कि गृह सचिव रिसले ने कहा कि अविभाजित बंगाल एक बहुत बड़ी ताकत है और विभाजित होने से इसकी ताकत कम

हो जायेगी।

(2) हिन्दू मुसलमानों में मतभेद पैदा करना एवं फूट डालो और राज करो की नीति के माध्यम से ब्रिटिश शासन को मजबूत बनाना।

(3) मूल बंगाल (पश्चिमी बंगाल) में बंगला भाषी लोगों की आबादी कम करके वहां गैर बंगला भाषी उड़िया एवं हिन्दी भाषी लोगों को प्रमुख बनाकर आपस में लड़ाना

(4) बंगाली अभिजात्य वर्ग की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर इनकी राजनीतिक स्थिति को कमजोर करना।

परिणाम

भारतीय राष्ट्रवादियों ने विभाजन के पीछे ब्रिटिश के वास्तविक उद्देश्य को समझा। अतः विभाजन के विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की। इसी के साथ उग्रवादी आंदोलन की औपचारिक शुरुआत हुई तो दूसरी तरफ मुस्लिम सम्प्रदायवाद को बढ़ावा मिला और

मुस्लिम लीग का गठन हुआ।

स्वदेशी आंदोलन → Imp UPSC → उग्रवादी आंदोलन का है

- कारण → बंगाल विभाजन
- कार्यक्रम
- कार्य पद्धति
- प्रसार — महाराष्ट्र, मद्रास
- सामाजिक आधार

मूल्यांकन
- योगदान
- सीमाएं

कार्यक्रम-

(1) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
(2) सरकारी स्कूल, अदालत एवं उपाधियों का बहिष्कार
(3) रचनात्मक कार्यक्रम पर बल देते हुए, सामाजिक सुधार पर बल देना, जैसे बाल विवाह, दहेज के विरोध आवाज उठाना।
(4) आत्म निर्भरता हेतु राष्ट्रीय शिक्षा एवं स्वदेशी पर बल देना।

कार्यपद्धति

(1) विभिन्न समितियों का गठन कर हड़तालों का आयोजन कर जनता को एकजुट किया गया।
(2) बहिष्कार एवं निष्क्रिय पद्धति प्रतिरोध पर बल
(3) महिलाओं द्वारा विदेशी सामग्रियों को रखने वाले दुकानों पर धरना-देना
(4) धार्मिक प्रतीक एवं नारों का उपयोग कर जनता को संगठित करना
(5) पारंपरिक त्यौहारों, धार्मिक मेलों, संगीत, नाट्य मंचों के माध्यम से आंदोलन का संदेश जन समुह तक पहुंचाना। जैसे - शिवाजी महोत्सव, गणेश महोत्सव, रक्षा बंधन आदि।

प्रसार

स्वदेशी आंदोलन बंगाल विभाजन के विरुद्ध शुरु हुआ किन्तु बंगाल क्षेत्र का अतिक्रमण कर विभिन्न प्रांतों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

~~मुस्लिम लीग का गठन भी हुआ।~~

तिलक ने बाम्बे एवं पूना मे, तो लाला लाजपतराय ने पंजाब मे, तो सैय्यद हैदर रजा ने दिल्ली मे तो चिदम्बरम पिल्लई ने मद्रास मे आंदोलन का नेतृत्व किया

सामाजिक आधार -

(1) आंदोलन मे विद्यार्थी मुख्य कर्ता धर्ता थे।

(2) महिलाए पहली बार घर से बाहर निकल कर जुलूस मे शामिल हुई।

(3) मुसलमानो की बहुसंख्यक भागीदारी नही रही, बल्कि मुसलमानो की तरफ से विरोध ही हुआ, जिसका नेतृत्व ढाका के नवाब सलीमुल्ला कर रहे थे। किन्तु दूसरी तरफ सैय्यद हैदर रजा, अब्दुल रसूल जैसे मुस्लिम नेतृत्व कर्ता आंदोलन मे शामिल हुए। इस तरह मुसलमानो की

निर्णायक भूमिका देखी जा सकती है।

मूल्यांकन

योगदान :

(1) स्वदेशी आंदोलन ने राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार को मजबूत किया।

(2) स्वदेशी आंदोलन ने नयी राजनीतिक पद्धतियों जैसे- असहयोग, जेल भरो, हड़ताल, निष्क्रिय प्रतिरोध, रचनात्मक कार्य आदि का विकास किया।

(3) स्वदेशी पर बल देने के क्रम में अनेक भारतीय उद्योगों की स्थापना हुई। जैसे - ~~वस्त~~ वस्त्र उद्योग, दियासलाई उद्योग, बंगाल कैमिकल्स आदि

(4) राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई और इसी क्रम में वैज्ञानिक शिक्षा देने की बात की गई। साथ ही बंगाल नेशनल कालेज की स्थापना हुई जिसके प्राचार्य अरविंद घोष को

इस तरह शिक्षा के माध्यम से स्वावलंबन पर बल दिया गया।

5 विज्ञान के क्षेत्र में जगदीश चन्द्र बोस, प्रफुल्ल चन्द्र राय की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

(6) सांस्कृतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां रहीं- ~~रवि~~ रवीन्द्र नाथ टैगोर, दक्षिणा सेन, मित्र मजूमदार, रजनीकांत सेन जैसे साहित्यकारों ने बंगला साहित्य और गौरव का विकास किया। टैगोर ने 'आमार सोनार' बांग्ला नामक गीत की रचना की जो आगे चलकर बंगला देश का गौरव गान बना। इसी तरह मजूमदार ने 'ठाकुर मार झूली (दादी मां की कथा) लिखी जो आज भी बंगला बच्चों को प्रेरित करती है।

(7) कला के क्षेत्र में अविन्द्र नाथ टैगोर ने मुगल एवं राजपूत चित्रकला से प्रेरित होकर स्वदेशी चित्रकला का विकास किया।

इसी क्षेत्र में नंदलाल घोष ने उल्लेखनीय कार्य कर कला की ख्याति प्राप्त की।

सीमाएं-

आंदोलन में धार्मिक प्रतीकों एवं नारों के प्रयोग ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया

निष्कर्ष-

कुल मिलाकर स्वदेशी आंदोलन के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को नयी दिशा प्राप्त हुई। हम कह सकते हैं कि नयी सदी के साथ ही नयी दिशा, नया लक्ष्य, नयी पद्धति का विकास हुआ। ये नवीन प्रवृत्तियां थी-

(1) राजनीतिक उदारवाद से उग्रवाद
(2) नया लक्ष्य- स्वराज की प्राप्ति
(3) नयी आंदोलन की पद्धति
(4) जन संगठन पर आधारित कार्यक्रम। जैसे- हड़ताल, धरना, बहिष्कार
(5) नयी विचारधारा- स्वदेशी पर बल देकर

ब्रिटिश आर्थिक हितों पर चोट करना और रचनात्मक कार्यों पर बल।

Q नयी सदी के साथ ही नयी इच्छियां, नये लक्ष्य, नये पहलियां सामने आयी। टिप्पणी कीजिए

क्रांतिकारी आंदोलन

- उदय के कारण
- कार्यक्रम
- प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण में अंतर
- प्रसार
  - देश
  - विदेश
- पतन के कारण
  - मूल्यांकन

उदय का कारण

(1) नरमपंथी राजनीति अव्यवहारिक एवं गरमपंथी राजनीति असफल हो रही थी। अतः बम और पिस्तौल की राजनीति में विश्वास जागा।

(2) सरकार की दमनात्मक कार्यवाही ने युवकों को विद्रोही बनाया। अब वे बल से बल को रोकने के दर्शन में विश्वास करने लगे।

(3) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से भी क्रांतिकारी गतिविधियाँ बढ़ी। जैसे- युगांतर, संध्या, बंदीजीवन आदि (बंदीजीवन की रचना शचीन्द्रनाथ सान्याल ने की थी इसे क्रांतिकारियों की बाइबिल कहा जाता है।)

(3) 1923-24 के द्वितीय चरण के क्रांतिकारी आंदोलन को तत्कालीन असहयोग आंदोलन की वापसी ने आधार प्रदान किया। वस्तुतः गांधी द्वारा अचानक आंदोलन वापसी से युवा वर्ग को अब कोई अन्य विकल्प नजर नही आया और वे एक बार फिर बम और पिस्तौल की राजनीति की ओर उन्मुख हुए।

(4) समाजवादी विचारधारा के उदय ने भी इनके उदय मे भूमिका निभायी। रूसी क्रांति की सफलता से युवा वर्ग प्रेरित हुआ। और अस्त्र शस्त्र के माध्यम से अपनी मांगे मनवाने का प्रयास किया।

(5) ये क्रांतिकारी आयरलैण्ड के उग्रवादी एवं रूस के Nihlist-शून्यवादी के वीरतापूर्ण कार्यों से भी प्रेरित हुए।

कार्यक्रम

(1) अलोकप्रिय ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
(2) गुप्त समितियां की स्थापनाकर कार्यवाही करना
(3) स्वदेशी डकैती करना (अपने देश का वह धन जो ब्रिटिश सरकार के पास है, को आतंकी साधनों के माध्यम से लूटना। काकोरी ट्रेन डकैती इसका उदा है।)
(4) क्रांतिकारी विचार के प्रसार हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना और लोगों के मातृभूमि के प्रति प्रेम जाग्रत करना।
(5) बम बनाना एवं विदेशों से हथियार हासिल करना।
(6) सैनिक शिक्षा एवं धार्मिक प्रयों के जरिये लोगों में वीरता का भाव पैदा करना

प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण में अंतर

20वीं सदी के द्वितीय चरण के क्रांतिकारी अब समाजवादी विचारधारा से युक्त हो गये। जैसे भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि। भगत सिंह

ने स्पष्ट किया कि हम उस व्यवस्था को समाप्त करना है जिसमें लोग शोषण करते हैं। अर्थात राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ साथ एक समाजवादी समाज की स्थापना का लक्ष्य बनाया। रेल परिवहन एवं जहाज निर्माण तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बम और पिस्तौल का प्रयोग शोषकों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए है। भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए जनता का शोषण करते रहेंगे। इस बात का कोई महत्व नहीं कि शोषक अंग्रेज हैं या भारतीय या फिर दोनों का गठबंधन। इस तरह क्रांतिकारियों ने उद्घाटित किया कि बम और पिस्तौल की राजनीति में मेरा कोई विश्वास नहीं है। वस्तुतः क्रांतिकारियों का लक्ष्य स्वतंत्र भारत में किसान एवं मजदूरों

के राज्य की स्थापना करना है।

(2) द्वितीय चरण में क्रांतिकारियों ने समाजवादी विचारधारा को आधार तो बनाया ही साथ ही राष्ट्रवादी तत्वों से युक्त रहे। जबकि प्रथम चरण में क्रांतिकारी केवल राष्ट्रवादी थे अर्थात ब्रिटिश से मुक्ति केवल लक्ष्य था।

प्रसार·

1905 में सावरकर बंधुओं ने महाराष्ट्र में 'मित्र मेला', एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।

(2) बंगाल में 1902 में अनुशीलन समीति की स्थापना बारीन्द्र कुमार एवं ~~भूपेन्द्र~~ जतीन्द्र नाथ ने की।

(3) बंगाल में बारीन्द्र कुमार घोष एवं भूपेन्द्र नाथ दत्त ने 'युगांतर' नामक पत्र का प्रकाशन किया, जिसमें कहा गया कि बल के द्वारा ही बल को रोका जा सकता है

(4) 1930 में बंगाल में विनय बादल एवं दिनेश नामक

क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्याकर अपनी मांगों को सामने रखा।

(5) 1930 में सूर्यसेन ने चटगांव सस्त्रागार पर कब्जा किया अर्थात सरकारी संस्थाओं पर नियंत्रण स्थापित किया

(6) 1926 में भगत सिंह ने 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसमें विद्यार्थियों को क्रांतिकारी विचारधारा की ओर उन्मुख किया जाता था साथ ही समाजवादी विचारधारा का प्रसार भी किया गया।

(7) द्वितीय चरण के दौर में महिलाओं ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। इस संदर्भ में प्रीति लता वाडेकर, कल्पना ~~दत्ता~~, बीना दास, शांति घोष, सुनीता चौधरी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने ब्रिटिश अलोकप्रिय अधिकारियों की हत्या और सरकारी संस्थानों पर हमलाकर ब्रिटिश

साम्राज्य के समुख व्यक्तिगत चुनौती पेश की।

विदेशों में

लंदन

1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने इण्डिया होमरूल सोसायटी की स्थापना की जिसका लक्ष्य था– भारत के लिए स्वराज प्राप्त करना। श्यामजी ने लंदन में भारतीयों के रहने के लिए एक इण्डिया हाउस नामक हास्टल की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह संगठन और और उसका हास्टल विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर भारत के लिए आजादी का वैचारिक आधार तैयार करता था। यह संगठन ब्रिटिश साम्राज्य-वादी नेता हीडमैन की प्रेरणा से बनाया गया। इस तरह से समाजवादी विचारो से युक्त होकर इसने कार्य किया।

अमेरिका

अमेरिका में 1913 में पोर्टलैण्ड में 'हिन्दी एसोसिएशन' की स्थापना हुई। इसी का नाम 'गदर पार्टी' रखा गया। गदर पार्टी की स्थापना में सैन फ्रांसिस्को नगर में लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना एवं परमानन्द थे। इस पार्टी ने गदर नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जो गुजराती, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं में निकलती थी। इस पार्टी का मूल स्वरूप इसका धर्म निरपेक्ष स्वरूप था। इसने विदेशों में भारतीय समस्या को उठाया और विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर उन्हे कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

अफगानिस्तान

1915 में राजा महेन्द्र प्रताप ने बरकतुल्ला एवं ओबेदुल्ला सिंधी की सहायता

से काबुल मे भारत की पहली स्वतंत्र अस्थायी सरकार का गठन किया जिसके राष्ट्रपति महेन्द्र प्रताप थे।

जर्मनी एवं सिंगापुर - आजाद हिन्द फौज के माध्यम से सुभाष चन्द्र बोस ने फासीवादी शक्तियों का सहयोग लेकर भारत की आजादी हेतु एक सेना का निर्माण किया और सशस्त्र कार्यवाही की योजना बनायी।

पतन का कारण -

(1) गुप्त संगठन के कारण क्रांतिकारियों की पहुँच आम जनता तक नही पायी। अतः आंदोलन का सामाजिक आधार सीमित था। अर्थात जनाधार के बिना व्यक्तिगत वीरता साम्राज्यवाद से कब तक टकराती।

(2) बम और पिस्तौल की राजनीति लोगो को आकर्षित नही कर पायी।

(3) प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिका ब्रिटिश के

साथ आ गया तो वहां से क्रांतिकारियों को हटना पड़ा।

(4) गांधी के अहिंसा सिद्धांत ने क्रांतिकारियों की जड़ें खोद दी।

योगदान

(1) व्यक्तिगत वीरता एवं बलिदान की भावना जागी और ब्रिटिश को सशस्त्र कार्यवाही के माध्यम से कड़ी चुनौती दी।

गांधीवाद

- पृष्ठभूमि
- विचारधारा
  - सत्य अहिंसा
  - सत्याग्रह
  - साधन-साध्य पवित्रता
  - वर्ग समन्वय
  - सर्वोदय
  - आर्थिक विचारधारा (ट्रस्टीशिप)
  - सामाजिक ,,
  - शिक्षा के संदर्भ में
- कार्यपद्धति रणनीति
- प्रमुख आंदोलन
  - खिलाफत
  - असहयोग
  - सविनय अवज्ञा
  - भारत छोड़ो

रणनीति

- आंदोलन के सक्रिय एवं निष्क्रिय दौर में विश्वास
- दबाव समझौता - दबाव की रणनीति
  (संघर्ष-विराम-संघर्ष)
- जनता की केन्द्रीय भूमिका पर बल
- नियंत्रित जन आंदोलन पर बल
- साधारण जीवन शैली
- रचनात्मक कार्य

दक्षिण अफ्रीका	भारत
प्रयोगशाला	
ब्रिटिश उपनिवेश	✓
↓ शोषण चरम पर	✓
↓ भारतीय जनता भी	✓
↓ अशिक्षित	✓
बहु भाषा भाषी - धर्म	✓
नस्ल भेद	✓

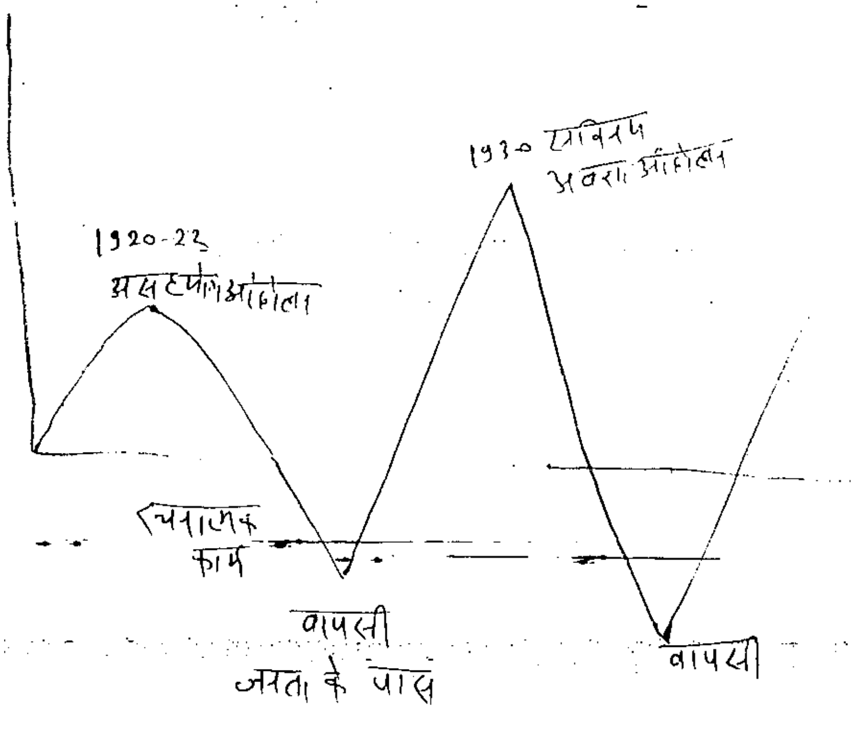

1942 भारत छोड़ो
भारतीय राष्ट्रवाद
व्यस्क हो गया
आंदोलन जनता की
विवेक पर छोड़
दिया

गांधी सम्प्रदायिकता की समस्या के मामले में लगातार असफल रहे।

सत्याग्रह

यह सत्य एवं अहिंसा पर आधारित पद्धति है। अहिंसा एक शक्ति है जो विरोधी हृदय पर विजय प्राप्त करती है। दरअसल यह भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के आगे झुकाने की कला है। अहिंसा का यह सिद्धांत व्यापारिक, कृषक, मजदूर परिवार के सभी सदस्यों एवं समाज के सभी वर्गों को आकर्षित करता है। वस्तुतः अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध ही सत्याग्रह है। सत्याग्रही को हड़ताल, असहयोग, धरना, बहिष्कार जैसे साधनों का प्रयोग करना पड़ता है

सत्याग्रह में विपक्षी के हृदय परिवर्तन पर बल दिया जाता है जबकि निष्क्रिय प्रतिरोध में विरोधी को पराजित करने का भाव शामिल होता है

(2) साधन- साध्य की पवित्रता पर बल

गांधी ने कहा कि साधन बीज है और साध्य वृक्ष इसलिए साधन की पवित्रता सर्वाधिक

महत्वपूर्ण है। यही वजह है कि गांधी ने फासीवादी शक्तियों से सहयोग लेना स्वीकार नही किया।

वर्ग समन्वय -

गांधी ने समाज के सभी वर्गों में सहयोग एवं समन्वय पर बल दिया। वस्तुत: सबको सर्वसमावेशी नीति के तहत एकजुट करके जनशक्ति के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को सशक्त बनाया जा सकता था अर्थात औपनिवेशिक शक्ति के सामने जनशक्ति को लाकर अपने लक्ष्य को पाया जा सकता था। इसलिए, गांधी ने किसान-जमींदार, मालिक-मजदूर सहयोग पर बल दिया। गांधी का यह चिंतन मार्क्स के वर्ग संघर्ष की अवधारणा के विरुद्ध ठहरता है।

सर्वोदय -

इसका तात्पर्य है सबकी उन्नति का

प्रयास करना। इसके माध्यम से गांधी समाजवादी समाज का आदर्श रखा। गांधी का यह सिद्धांत न केवल उस दौर में बल्कि आज के दौर की समस्याओं का भी समाधान करता है। जैसे- नक्सलवाद, भुखमरी, विषमता, अशिक्षा आदि। समस्यायें इसलिए पैदा हो रही हैं क्योंकि सबकी उन्नति को ध्यान में रखकर नीतियों का क्रियान्वयन नहीं हो पाया।

आर्थिक सिद्धांत

इसके तहत गांधी ने कहा कि स्वामित्व नीजी होते हुए भी स्वामी उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए सुलभ कराये अर्थात मालिक ~~उस सम्पत्ति~~ का महज एक संरक्षक है। इस तरह गांधी ने न्यास का सिद्धांत देकर मालिक- मजदूर सहयोग पर बल देते हुए वर्ग समन्वय और राष्ट्रीय विकास का प्रयास किया।

गांधी ने आधुनिक ~~औद्योगिक~~ औद्योगीकरण की आलोचना की। उनकी यह आलोचना लघु एवं कुटिर उद्योगों के पतन के संबंध में थी क्योंकि भारत की बहुसंख्यक आबादी गांवों में बसती थी तथा कुटिर उद्योग के पतन से यह आबादी पिछड़ रही थी।

सामाजिक सिद्धांत

गांधी ने ~~अ~~ ऊंच-नीच, छुआ छूत, लैंगिक भेद की समाप्ति पर बल दिया और आदर्श समाज की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित किया। इसी क्रम में उन्होंने अस्पृश्यता की समाप्ति पर बल दिया और अछूतोद्धारक कार्यक्रम चलाया। गांधी ने समाज में शिक्षा का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा कि शिक्षा आत्मसाक्षात्कार है अर्थात स्वयं को ~~पह~~ पहचानने की कला है। उन्होंने मातृभाषा की शिक्षा पर बल देते हुए

शिक्षा को उत्पादन से संबद्ध किया जो वर्धा शिक्षा योजना के नाम से जानी जाती है। गांधी ने स्त्री शिक्षा पर बल दिया उन्होंने कहा कि यदि हम एक पुरुष को पढ़ाते हैं तो हम एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं जबकि एक महिला को शिक्षित करना एक परिवार को शिक्षित करना है क्योंकि महिला परिवार की प्राथमिक इकाई है।

कार्य पद्धति

(1) आंदोलन के सक्रिय एवं निष्क्रिय दौर में विश्वास

गांधी का मानना था कि जनांदोलन लंबे समय तक लगातार नहीं चल सकता क्योंकि जनता के दमन सहने की शक्ति असीमित नहीं होती इसलिए आंदोलन को दमन के शुरू होते ही वापस ले लेना चाहिए अर्थात जन आंदोलन की ऊर्जा समाप्त होने से पहले ही आंदोलन वापस लेना चाहिए और फिर वापसी के इस दौर अर्थात निष्क्रिय दौर में रचनात्मक कार्य करना चाहिए

जिससे जनता की गतिशीलता बनी रहे और आंदोलन पुनः शुरु करने पर जनता ऊर्जावान हो जाए।

(2) दबाव समझौता दबाव की रणनीति

जनांदोलन के माध्यम से सरकार पर दबाव डालकर उसे समझौता के लिए बाध्य करना और फिर जो मांगें बची रह जायें उनके लिए पुनः आंदोलन छेड़कर दबाव बनाना रणनीति का एक हिस्सा था। यह रणनीति राष्ट्रीय आंदोलन की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं करती। वस्तुतः राष्ट्रीय आंदोलन विभिन्न विचारधाराओं एवं दलों के माध्यम से चल रहा था। इसलिए गांधीवादी रणनीति कांग्रेस के अन्तर्गत चलाये जा रहे राष्ट्रीय आंदोलन की समग्र व्याख्या तो करती है।

निर्मित जन आंदोलन पर बल

सत्याग्रह अहिंसा के माध्यम से गांधी ने जनता

पर नियंत्रण रखा। वस्तुतः अनियंत्रित जन आंदोलन में हिंसा की संभावना थी और इससे सभी वर्गों की भागीदारी हतोत्साहित होती है तो साथ ही हिंसा के बहाने ब्रिटिश को दमन का अवसर भी मिल जाता है। इसलिए गांधी ने नियंत्रित जन आंदोलन पर बल दिया तो दूसरी तरफ गांधी जन आंदोलन में जनता की भागीदारी को बढ़ाना भी चाहते थे। यही तो गांधीवादी आंदोलन का विरोधाभास है और गांधी इस विरोधाभास के बावजूद जनता के बीच अपनी लोकप्रियता बनाये रखने में सफल रहे और इसका आधार था गांधी की जीवन शैली में रचनात्मक कार्य।

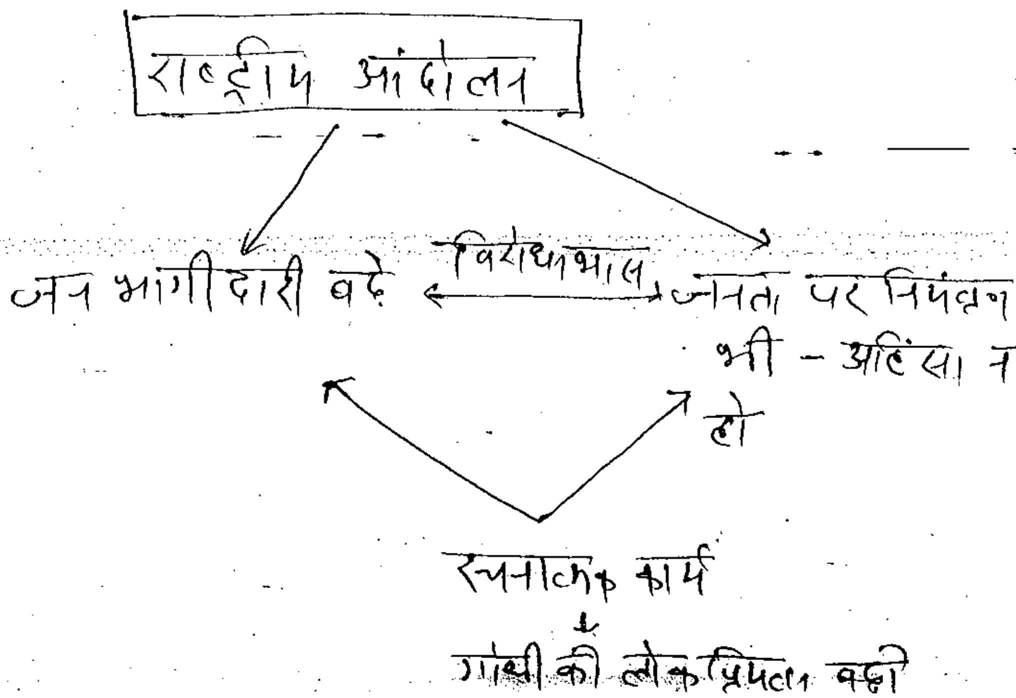

Q गांधीवादी रणनीति के विरोधाभास की व्याख्या आप कैसे करेंगे?

राष्ट्रीय आंदोलन में

जन भागीदारी बढ़े ⟷ जनता नियंत्रण में रहे

विरोधाभास

साधारण जीवन शैली एवं रचनात्मकता

गांधी ने स्वयं को आम जनता से जोड़ने के लिए साधारण जीवन शैली अपनायी। इसी क्रम में साधारण वेश-भूषा, आम बोलचाल की भाषा एवं यात्रा के लिए भी जन साधारण के साधनों का प्रयोग किया। फलत: गांधी आम-जन के ~~वास्तविक~~ वास्तविक प्रतिनिधि बन गये

रचनात्मक कार्यों के अन्तर्गत गांधी ने हिन्दू मुस्लिम एकता, हरिजन उद्धार कार्यक्रम, लैंगिक समानता, प्राकृतिक चिकित्सा

ग्राम पंचायत एवं चरखे के प्रयोग पर बल दिया। इसके माध्यम से आंदोलन को खुला अवस्था मे भी गतिशील और जागरूक बनाये रखा। यही वजह है कि आंदोलन के पुनः शुरु करने पर जन भागीदारी मे लगातार वृद्धि हुई।

खिलाफत आंदोलन

- परिस्थितियां/कारक
- उद्देश्य
- पतन
- परिणाम
- मूल्यांकन
  - क्या गांधी की गलती थी?

तुर्की का खलीफा मुस्लिम विश्व का आध्यात्मिक प्रमुख माना जाता था। भारतीय मुसलमान भी भावनात्मक रूप से इससे जुड़े थे। प्रथम विश्व युद्ध मे तुर्की ब्रिटिश सरकार के ~~विरुद्ध था~~ किन्तु युद्ध मे मुसलमानों का समर्थन लेने के लिए ब्रिटिश सरकार ने मुस्लिमों को आश्वासन दिया कि तुर्की सुल्तान का सम्मान बनाये रखा जायेगा, किन्तु युद्ध के पश्चात सेवर्स की संधि के तहत ब्रिटिश ने उपरोक्त आश्वासन को

भंग कर दिया। फलतः भारतीय मुसलमान भी ब्रिटिश के खिलाफ एकजुट हुए। 1916 के लखनऊ अधिवेशन में हिन्दू मुस्लिम एकता के क्रम में कांग्रेस ने पृथक निर्वाचन को स्वीकार कर लिया। अतः गांधी ने हिन्दू मुस्लिम एकता के अगले कदम के रूप में खिलाफत आंदोलन में भागीदारी की और ब्रिटिश के साथ असहयोग के लिए कांग्रेस को भी तैयार किया।

उद्देश्य-

खलीफा की सर्वोच्चता एवं उसकी शक्ति को पुनः स्थापित करना।

गतिविधियां

1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन हुआ और इसकी अध्यक्षता गांधी ने की। सरकार से खलीफा के प्रति न्याय करने की मांग की अन्यथा सरकार से असहयोग किया जायेगा।

इस समय जलियावाला बाग हत्याकाण्ड की रिपोर्ट आयी जिसमें जनरल डायर को निर्दोष करार दिया गया। अतः गांधी ने पंजाब के नरसंहार, खिलाफत के मुद्दे पर कांग्रेस को भी आंदोलन के लिए तैयार किया।

पतन -

कांग्रेस के असहयोग आंदोलन के बढ़ते प्रभाव से खिलाफत का मुद्दा दब गया तो दूसरी तरफ खिलाफत नेताओं को सरकारी दमन का सामना करना पड़ा और फिर जब तुर्की के सुल्तान ने खलीफा के पद को समाप्त कर दिया तो खिलाफत आंदोलन स्वयमेव समाप्त हो गया।

परिणाम

(1) ब्रिटिश विरोधी आंदोलन को बढ़ावा मिला
(2) मुसलमानों की भारतीय राजनीति में भागीदारी बढ़ी।

(3) पहली बार राजनीति में किसी विशेष सम्प्रदाय के मामले को शामिल किया गया। फलतः कट्टरपंथियों को राजनीति में हस्त-क्षेप का मौका मिला। इसने सम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया।

मूल्यांकन

खिलाफत आंदोलन को राजनीति से जोड़ना गांधी की भूल बताया जाता है क्योंकि धर्म का राजनीति में प्रवेश हुआ और इससे सम्प्रदायिकता बढ़ी।

इस संबंध में कोई निर्णय करने के पूर्व यह जानना जरूरी है कि गांधी ने ~~खिलाफत का~~ मुद्दा उठाया क्योंकि वस्तुतः ब्रिटिश फूट डालो एवं राज करो की नीति पर चल रहे थे और खिलाफत का मुद्दा हिन्दु मुस्लिम एकता का अवसर प्रदान कर रहा था। इसलिए गांधी ने सोच-

विचार कर इस मुद्दे को उठाया। क्योंकि खिलाफत का मुद्दा दूसरे सम्प्रदाय के विरोध में नहीं था, इसलिए भारत के विभिन्न वर्गों ने इसका समर्थन किया। इस दृष्टि से यह गांधी की भूल नहीं थी। साथ ही गांधी का प्रति धर्म के प्रति दृष्टिकोण जानना जरुरी है। उनके लिए धर्म नैतिकता का पर्याय था, इसलिए वे राजनीति व धर्म को अलग करके नहीं देखते।

History & Indian Culture

DECEMBER

13

50th Week • 347-018

Friday

DECEMBER 2013						
M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

World History

09 (1) पुनर्जागरण, धर्मसुधार Move व प्रबोधन

(2) अमेरिकी क्रांति (3) फ्रांसीसी क्रांति

10 (4) औद्योगिक क्रांति (5) इटली का एकीकरण

11 (6) जर्मनी का एकीकरण (7) Ist W.W.

(8) 1917 की रूसी क्रांति (9) फासीवाद व

12 नाजीवाद (10) IInd W.W. (11) 1949 की

01 चीनी क्रांति (12) साम्राज्यवाद

02 (13) Cold war (14) USSR का विघटन (15) महत्वपूर्ण राजनीतिक दर्शन

03 Indian History

04 (1) भारत में ब्रिटि. आर्थिक नीति (2) औपनिवेशिक नीतियाँ (3) धार्मिक सामाजिक Movement (4) Indian National

05 Movement (5) गाँधी युग (6) ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध विद्रोह

Evo